सिन्धु घाटी सभ्यता

★ **खोज, समयावधि एवं विस्तार –**

:– बीसवी सदी की शुरूआत तक इतिहासवेताओं की यह धारणा थी कि वैदिक सभ्यता भारत की प्राचीनतम सभ्यता है। लेकिन बीसवी सदी के तीसरे दशक में खोजे गए स्थलों से यह साबित हो गया कि वैदिक सभ्यता से पूर्व भी भारत मे एक अन्य सभ्यता विद्यमान थी

:–इसे हडप्पा सभ्यता या सिन्धु घाटी सभ्यता के नाम से जाना जाता है। क्योंकि इसके प्रथम अवशेष हडप्पा नामक स्थान से प्राप्त हुए थे तथा आरम्भिक स्थलों में से अधिकांश सिन्धु नदी के किनारे अवस्थित थे ।

:–सिन्धु घाटी सभ्यता की विस्तार अवधि 2400–1700 ई. पू. थी ।

:–सर्वप्रथम 1921 ई0 में रायबहादूर दयाराम साहनी ने हडप्पा नामक स्थान पर इसके अवशेष खोजे थे ।

:–इस सभ्यता का विस्तार पंजाब, सिन्ध, बलूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान, जम्मू और पश्चिमी उतर प्रदेश तक था ।

★ **नगर योजना** :–

इस सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषता नगर योजना थी। नगरों में सडके व मकान विधिवत् बनाये गये थे । मकान पक्की ईंटों के बने होते थे तथा सडकें सीधी थी। मोहनजोदडों मे एक विशाल स्नानागार मिला है। जो 11.88 मीटर लम्बा,7.01 मीटर चौडा एवं 2.43 मीटर गहरा था। (39 फीट × 23 फीट× 8 फीट) इस स्नानागार का प्रयोग आनुष्ठानिक स्नान के लिए होता था ।

★ **आर्थिक जीवन**

:– सैन्धव निवासियों के जीवन का मुख्य उद्यम कृषि कर्म था।

:– यहां के प्रमुख उद्यान गेहूं तथा जो थे । नगरों में अनाज के भण्डारण के लिए अन्नागार बने होते थे ।

:– कृषि के साथ–साथ पशुपालन का भी विकास हुआ

:– कृषि तथा पशुपालन के साथ–साथ उद्योग एवं व्यापार भी अर्थव्यवस्था के प्रमुख आधार थे वस्त्र निर्माण इस काल का प्रमुख उद्योग था ।

:– सूती वस्त्रों के अवशेषों से ज्ञात होता है। कि यहां के निवासी कपास उगाना भी जानते थे विश्व में सर्वप्रथम यहीं के निवासियों ने कपास की खेती प्रारम्भ की थी।

:– इस सभ्यता के लोगों की मूहरें एवं वस्तुएं पश्चिम एशिया तथा मिश्र में मिली है। जो यह दिखाती है। कि उन देशों के साथ इनका व्यापारिक सम्बन्ध था।

:–यहां के निवासी वस्तु विनिमय द्वारा व्यापार किया करते थे ।

★ **शिल्प तथा उद्योग –धंधे**

:– कृषि तथा पशुपालन के अतिरिक्त यहां के निवासी शिल्पों तथा उद्योग–धन्धों में भी रूचि लेते थे ।

:– यहां के निवासी धातु निर्माण उद्योग,आभुषण निर्माण उद्योग, बर्तन निर्माण उद्योग, हथियार–औजार निर्माण उद्योग व परिवहन उद्योग से परिचित थे

★ **सामाजिक जीवन**

:– सैन्धव निवासियों का सामाजिक जीवन सुखी तथा सविधापूर्ण था व सामाजिक व्यवस्था का मुख्य आधार परिवार था।

:– सामाज व्यवसाय के आधार पर चार भागों में विभाजित था– विद्वान, योद्धा, व्यापारी, तथा शिल्पकार और श्रमिक

:– सैन्धव निवासी आमोद–प्रमोद के प्रेमी थे । जुआ खेलना , शिकार करना, नाचना, गाना–बजाना आदि लोगों के आमोद–प्रमोद के साधन थे । पासा इस युग का प्रमुख खेल था।

★ **धार्मिक जीवन**

:– मातृ देवी के सम्प्रदाय का सैन्धव–संस्कृति में प्रमुख स्थान था मातृ देवी की ही भांति देवता की उपासना में भी बलि का विधान था

:–यहां पर पशुपतिनाथ, महादेव, लिंग, योनि, वृक्षों व पशुओं की पूजा की जाती थी ये लोग भूत–प्रेत, अन्धविश्वास व जादू–टोना पर भी विश्वास रखते थे ।

:– बैल को पशुपतिनाथ का वाहन माना जाता था । फाख्ता एक पवित्र पक्षी माना जाता था।

:– 'स्वास्तिक' चिह्न सम्भवतः हडप्पा सभ्यता की देन है।

★ **लेखन कला**

:– दुर्भाग्यवश, अभी तक सिन्धु–सभ्यता की लिपि को पढा नहीं जा सका है। इसमें चित्र और अक्षर (लगभग400 अक्षर एवं 600 चित्र) दोनों ही ज्ञात होते है।

:– यह लिपि प्रथम लाइन में दाएं से बाएं तथा द्वितीय लाइन में बाएं से दाएं लिखी गयी है। यह तरीका

'बाउस्ट्रोफिडन'(Boustrophedon) कहलाता है।

★ **सभ्यता का अन्त**

:– यह सभ्यता तकरीबन 1000 साल रही ।
:– इसके अन्त के कारणों के बारे में इतिहासकार एकमत नहीं है। और अलग अलग मत दिये गये है। जिनमें प्रमुख है।
–जलवायु परिवर्तन, नदियों के जलमार्ग में परिवर्तन, आर्यों का आक्रमण, बाढ, सामाजिक ढांचे में बिखराव , भुकम्प आदि

वैदिक काल

- भारतीय इतिहास में 1500 ई. पू. से 600 ई. पू. तक के कालखण्ड को वैदिक सभ्यता की संज्ञा दी जाती है। वैदिक सभ्यता का विकास ग्रामीण अर्थव्यवस्था के आधार पर हुआ ।
- वैदिक सभ्यता को दो स्पष्ट कालखण्डों में विभाजित किया जाता है। **1500 ई0 पू0 से 1000 ई0 पू. तक के कालखण्ड को ऋग्वैदिक काल** और **1000 ई0 पू0 से 600 ई0 पू0 तक के कालखण्ड को उतर वैदिक काल** के नाम से जाना जाता है। भारत आने के पश्चात आर्य सर्वप्रथम **सप्त सैन्धव** प्रदेश से बसे थे ।

ऋग्वैदिक काल

★ **राजनीतिक स्थिती**

:– आरम्भ में आर्यो के कुटुम्ब, कुल या परिवार (गृह) रक्त सम्बन्धों पर आधारित थे । अनेक परिवारों को मिलाकर ग्राम बनता था, जिसका प्रधान ग्रामणी कहलाता था तथा अनेक ग्रामों को मिलाकर विश बनता था, जिसका प्रधान विशपति होता था कुटुम्ब ही सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई थी ।
:– अनेक विशों का समूह जन या कबीला कहलाता था जिसका प्रधान राजा/राजन या गोप होता था जनपद, राष्ट्र या राज्य की अवधारणा भी वैदिक काल के उतर्राद्ध में स्थापित हुई ।

★ **सामाजिक जीवन**

:–ऋग्वैदिक समाज का आधार परिवार था। परिवार **पितृसत्तात्मक** होता था । पितृसत्तात्मक तत्व की प्रधानता होते हुए भी परिवार में स्त्रिओं को यथोचरित आदर एवं सम्मान दिया जाता था । बाल विवाह की प्रथा नहीं थी । अन्तर्जातीय विवाह होते थे आर्यों का प्रारम्भिक सामाजिक वर्गीकरण वर्ण एवं कर्म के आधार पर हुआ
आर्यों के तीन प्रमुख वर्ग थे –
:–ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य, यह वर्गीकरण जातिगत या जन्मजात न होकर कर्म के आधार पर निश्चित किया गया था ।
:–सोम आर्यो का का मुख्य पेय पदार्थ था
:– स्त्री और पुरूष दोनो को आभुषण पहनने का शौक था । आभुषण सोने, चांदी, तांबे, हाथी दांत, व मूल्यवान पत्थरों आदि से निर्मित होते थे । मनोरंजन के साधनों में संगीत–गायन, संगीत वादन, नृत्य, चौपड, शिकार, अश्वघावन आदि शामिल थे ।

★ **धार्मिक स्थिती** :– ऋग्वैदिक काल में अग्नि, इन्द्र, वरूण, सूर्य, सवितु, ऋतु, यम, रूद्र, अश्विनी आदि प्रमुख देवता थे और ऊषा अदिति, रात्रि, संन्ध्या आदि प्रमुख देवियां थीं ।
:– देवताओं में सर्वोच्च स्थान इन्द्र को दिया गया है।
:– ऋग्वेद में जिन देवताओं की स्तुतियां अंकित हैं वे प्राकृतिक तत्वों में निहित शक्तियों के प्रतीक है। लेकिन इस समय पूजा अर्चना का उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति न होकर भौतिक सुख की प्राप्ति था इस काल में यज्ञों का अत्यधिक महत्व था।

★ **विस्तार** :– उत्तरवैदिक काल में आर्य सभ्यता पंजाब से कुरूक्षेत्र अर्थात् गंगा–यमूना दोआब में फैल गयी । कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था, कबायली संरचना में दरार, पडना, वर्ण व्यवस्था की जटिलता बढना, क्षेत्रगत राज्यों का उदय तथा धार्मिक कर्मकाण्डों की प्रधानता इस काल की प्रमुख विशेषताएं थी । तकनीकी विकास के दृष्टिकोण से लोहे का प्रयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण था

★ **राजनीतिक जीवन** :– इस समय ऋग्वेदिक कालीन अनेक छोटे–छोटे कबीले एक दूसरे मे विलीन होकर क्षेत्रफल जनपदों में बदलने लगे थे ।

★ **सामाजिक जीवन** :– परिवार पितृ प्रधान एवं संयुक्त परिवार था । समाज मे स्त्रियों की दशा में पतन हुआ। जाति–प्रथा कर्म के आधार पर न होकर जन्म के आधार पर होने लगी और उसमें कठोरता आ गई ।

★ **आर्थिक जीवन** :– इस युग में आर्यों के आर्थिक जीवन में महत्वपुर्ण परिवर्तन आये । पशुपालनन की अपेक्षा कृषि आर्थिक जीवन का मुख्य आधार बनी ।
:–गाय बैल के अतिरिक्त भैंस भी अब पालतु मवेशी बन गयी। कृषि तथा पशुपालन के अतिरिक्त मछुआ, सारथी, गडरिया, स्वर्णकार, मणिकार, रस्सी, बटने वाले , टोकरी बुनने वाले , धोबी , लूहार, जुलाहा आदि व्यवसायियों का उल्लेख मिलता है।
इस समय टोकरी के एक विशेष प्रकार के बर्तन बनाये जाते थे जिन्हें चित्रित धूसर मृद भाण्ड (Painted Grey Ware,PGW) कहा जाता है।

:–इस काल की अर्थव्यवस्था को प्राक्–शहरी अर्थव्यवस्था नाम दिया जा सकता है। क्योंकी ये न तो पूरी तरह ग्रामीण थी और न ही शहरी ।

★ **आर्थिक जीवन** :– उतरवैदिक काल में यज्ञ तत्कालीन संस्कृति का मूल आधार था । यज्ञ के साथ–साथ अनेक अनुष्ठान प्रचलन में थे ।

:– समाज में ब्राह्मणों का अनुभव काफी बढ गया क्योंकि सिर्फ वे ही धार्मिक अनुष्ठान करा सकते थे जादू–टोने मे विश्वास भी बढ गया था ।

वैदिक साहित्य

वेद :– वेद का अर्थ ज्ञान से है। इनसे आर्यों के आगमन व बसने का पता चलता है।

★ **ऋग्वेद**

:– ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 श्लोक (1017 सूक्त तथा 11 वलाखिल्य) तथा लगभग 10,600 मन्त्र है।
:– ऋग्वेद में अग्नि, सुर्य, इन्द्र, वरूण आदि देवताओं की स्मृति में रची गई प्रार्थनाओं का संकलन है।
:– 10 वें मण्डल में पुरूषसूक्त का जिक्र आता है। जिसमें 4 वर्णो (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) का उल्लेख है।
:– गायत्री मंत्र का उल्लेख ऋग्वेद में है। यह मंत्र सूर्य की स्तुति में है।

★ **यजुर्वेद**

:– यजुर्वेद कर्मकाण्ड प्रधान ग्रन्थ हैं इसका पाठ करने वाले ब्राह्मणों को **'अध्वर्यु '** कहा गया है।
:– यजुर्वेद दो भागों में विभक्त है–
:– कृष्ण यजुर्वेद (गद्य)
:– शुक्ल यजुर्वेद (पद्य)
यजुर्वेद एक मात्र ऐसा वेद है जो **गद्य और पद्य दोनो में रचा गया है।**

★ **सामवेद** :– साम का अर्थ **' गान'** से है
:–वेदों में सामवेद को **'भारतीय संगीत का जनक'** माना जाता है।

★ **अथर्ववेद** :– 'अथर्व' शब्द का तात्पर्य है – पवित्र जादू । अथर्ववेद में रोग–निवारण, राजभक्ति, विवाह, प्रणय गीत, अंधविश्वासों का वर्णन है।

उपवेद–
–ऋग्वेद–आयुर्वेद (चिकित्सा शास्त्र से सम्बन्धित)
–यजुर्वेद–धनुर्वेद (युद्धकला से सम्बन्धित)
–सामवेद–गांधर्ववेद (कला एवं संगीत से सम्बन्धित)
–अथर्ववेद–शिल्पवेद (भवन निर्माण कला से सम्बन्धित)

★ **ब्राह्मण** –––
–प्रत्येक वेद की गद्य रचना ही ब्राह्मण ग्रन्थ है।
–हर वेद के साथ ब्राह्मण जुडे हुए है–

वेद	ब्राह्मण
ऋग्वेद	कौशितकी
यजुर्वेद	तैतिरीय और शतपथ
सामवेद	पंचविश और जैमिनीय
अथर्ववेद	गोपथ

★ **आरण्यक** ––
–आरण्यक शब्द 'अरण्य' से बना है। जिसका अर्थ है। **जंगल**
–आरण्यक दार्शनिक ग्रन्थ है। जिनके विषय –– आत्मा, परमात्मा, जन्म, पुनर्जन्म आदि है।
ये ग्रन्थ जंगल के शान्त वातावरण में लिखे जाते थे एवं इनका अध्ययन भी जंगल में किया जाता था ।
–आरण्यक ज्ञानमार्ग एवं कर्ममार्ग के बीच एक सेतु का कार्य करते है।

★ **उपनिषद**––
–इनका शाब्दिक अर्थ उस विद्या से है। जो गुरू के समीप बैठकर, एकान्त में सीखी जाती है। इसमें आत्मा और ब्रह्मा के सम्बन्ध में दार्शनिक चिन्तन है। ये भारतीय दार्शनिकता के मुख्य स्त्रोत है। उपनिषद 108 है।
–इन्हें वेंदात भी कहते है। क्योंकि ये वैदिक साहित्य का अन्तिक भाग है। और ये वेंदों का सर्वोच्च व अन्तिम उद्देश्य बतलाते है।

★ **वेदांग** ––
–वेदों का अर्थ समझाने व सुक्तियों के सही उच्चारण के लिए वेदांग की रचना की गयी ।
–ये 6 है – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष ।

★ **षड्दर्शन**––
इनमें आत्मा, परमात्मा , जीवन–मृत्यू आदि से सम्बन्धित बातें है–

दर्शन	प्रवर्तक
सांख्य	कपिल
योग	पतन्जलि
वैशेषिक	कणाद
न्याय	गौतम
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उतर मीमांसा	बादरायण(व्यास)

★ **पुराण** ––
कुल पुराणों की संख्या 18 है।
–इनमें मुख्य है – मत्स्य, विष्णु, नारद, वामन आदि।
–सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रमाणिक मत्स्य पुराण है। जिसमें विष्णु के 10 अवतारों का उल्लेख है।

★ **रामायण** ––
–रामायण की रचना महर्षि वाल्मिकी ने की थी ।
–इसे **चतुर्विंशति सहस्त्री संहिता** भी का जाता है।

★ **महाभारत** ––
–इसकी रचना महर्षि व्यास ने की थी ।
–महाभारत को **जयसंहिता** और **सतसहस्त्री संहिता** के नाम से भी जाना जाता है।

★ **स्मृतियाँ** ––
–इनमें सामाजिक नियम बताये गये है। कुछ मुख्य स्मृतियाँ निम्न है –

मनुस्मृति	गौतम स्मृति
विष्णु स्मृति	नारद स्मृति
याज्ञवल्क्य स्मृति	वशिष्ठ स्मृति

बौद्ध धर्म

★ महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ई. पू. में नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी ग्राम में शाक्य क्षत्रिय कुल में हुआ था । इनके पिता का नाम शुद्धोधन तथा माता का नाम महामाया था । इनके जन्म के सातवें दिन ही इनकी माता महामाया की मृत्यू हो गई थी, अतः इनका पालन–पोषण इनकी मौसी प्रजापति गौतमी ने किया था। 16 वर्ष की आयु में इनका विवाह यशोधरा नामक राजकुमारी से हुआ । 28 वर्ष की आयु में इनके पुत्र राहुल का जन्म हुआ । 29 वर्ष की आयु में इन्होंने सत्य की खोज के लिए गृह–त्याग कर दिया ।
35 वर्ष की आयु में गया(बिहार)में उरूवेला नामक स्थान पर पीपल वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा की रात्रि में समाधिस्थ अवस्था में इनको ज्ञान प्राप्त हुआ । महात्मा बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश(प्रवचन) सारनाथ में दिया ।
483 ई पू में 80 वर्ष की आयु में महात्मा बुद्ध का देहांन्त कुशीनगर में हुआ ।

★ **बौद्ध धर्मग्रन्थ**–
आरम्भिक बौद्ध ग्रन्थ पालि भाषा मे लिखे गये थे 'खद्दक निकाय' में जातक कथाओं का वर्णन किया गया है। जो बुद्ध के पूर्व जीवन से सम्बद्ध है। बौद्ध ग्रन्थों में 'त्रिपिटक' सर्वाधिक महत्वपुर्ण है।
–विनय पिटक
–सुत पिटक
–अभिधम्प पिट

★ **गौतक बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएँ** –

ग्रह –त्याग की घटना	**महाभिनिष्क्रमण**
ज्ञान प्राप्ति की घटना	**सम्बोधि**
प्रथम उपदेश देने की घटना	**धर्मचक्रप्रवर्तन**
देहान्त	**महापरिनिर्वाण**

★ **बौद्ध महासंगीतियाँ**

संगीति	समय	स्थल	शासक	संगीति अध्यक्ष
प्रथम बौद्ध संगीति	483 ई. पू.	सप्तपर्णि (राजग्रह,बिहार)	अजातशत्रु (हर्यक वंश)	महाकस्सप
द्वितीय बौद्ध संगीति	383 ई. पू.	चुल्लबग्ग (वैशाली,बिहार)	कालाशोक(शिशुनागवंश)	साबकमीर
तृतीय बौद्ध संगीति	250 ई. पू.	पाटलीपुत्र (मगध की राजधानी)	अशोक (मौर्य वंश)	मोग्गलिपुत तिस्स
चतुर्थ बौद्ध संगीति	72 ई	कुण्डलवन (कश्मीन)	कनिष्क (कुषाणा वंश)	वसुमित्र
***इस संगीति में बौद्ध धर्म हीनयान और महायान में विभक्त हो गया था**				

जैन धर्म

★ जैन धर्म का संस्थापक ऋषभदेव को माना जाता है, जो कि पहले जैन तीर्थकर भी थे । जैन धर्म में कुल 24 तीर्थकर हुए– महावीर स्वामी जैन धर्म के 24 वें तीर्थकर थे । इनको जैन धर्म की वास्तविक संस्थापक भी माना जाता है। जैन तीर्थकर ' ऋषभदेव' तथा ' अरिष्टनेमि' का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

★ **महावीर स्वामी का जीवन परिचय –**

महावीर स्वामी का जन्म वैशाली के निकट कुण्डग्राम(वज्जि संघ का गणतन्त्र) में 540 ई.पु. में हुआ था इनके पिता का नाम सिद्धार्थ तथा माता का नाम त्रिशला था महावीर स्वामी का विवाह यशोदा नामक राजकुमारी से हुआ था महावरी स्वामी , सत्य की खोज के लिए 30 वर्ष की आयु में गृह–त्याग कर सन्यासी हो गये थे ।

★ महावीर स्वामी को 12 वर्ष की गहन तपस्या के पश्चात् जम्भिकग्राम के निकट ऋजुपालिका नदी के तट पर एक वृक्ष के नीचे सर्वोच्च ज्ञान (कैवल्य) के प्राप्ति हुई। कैवल्य की प्राप्ति के पश्चात उन्हें कई नामों से जाना जाने लगा यथा: कैवलीन, जिन (विजेता), निर्गन्थ (बन्धन रहित), महावीर , अर्हंत (योग्य) आदि । लगभग 72 वर्ष की आयु में 527 ई.पू. मे महावरी स्वामी की राजगृह के समीप पावापूरी में मृत्यू हो गई ।

★ **जैन धर्मग्रन्थ** ––

जैन धर्मग्रन्थों की रचना मुख्यतया प्राकृत भाषा में हुई । इन ग्रन्थों से महावरी की जीवनी एव जैन धर्म के उपदेशों के साथ साथ तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का भी ज्ञान होता है। महावरी के दिए मौलिक सिद्धात 14 प्राचीन ग्रंन्थों में है। जिन्है पूर्व कहते ळै। बाद में इन्हें 12 अंग व 12 उपगंगों में विभाजित कर दिया गया ।

★ **जैन धर्म के पंथ** ––

जैन धर्म दो पंथों में बंटा–**श्वैताम्बर एवं दिगम्बर** ।
श्वेताम्बर पंथ को मानने वाले श्वेत वस्त्र धारण करते है।
दिगम्बर पंथ को मानने वाले वस्त्रों का परित्याग करते है।

★ **जैन महासंगीतियाँ**

संगीति	समय	स्थल	संगीति अध्यक्ष
प्रथम जैन संगीति	322 से 298 ई0 पू0	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र
द्वितीय जैन संगीति*	512 ई0	वल्लभी	देवर्द्धि क्षमाश्रवण
***उद्देश्य –धर्म ग्रन्थों का संकलन कर उनको लिपिबद्ध करना ।**			

प्राचीन भारत के प्रमुख वंश एवं शासक

हर्यक वंश –

★ **बिम्बिसार** (544–492 ई.)-- हर्यक वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक था इनकी राजधानी गिरिव्रज(राजग्रह) थी। उसने अपनी स्थिती मजबूत करने के लिए कौशल, वैशाली एवं मद्र राजवंशों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये । उसकी राजधानी 5 महाडियों से घिरी थी, जिसका प्रवेश द्वारा चारों और से पत्थरो की दीवार से घिरा था इस वजह से राजगृह लगभग अविजित बन गया था । बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु(492–460 ई0) ने उसकी हत्या कर सिंहासन प्राप्त किया। अजातशत्रु बौद्ध धर्म का अनुयायी था एवं उसकी राजधानी में प्रथम बौद्ध महसभा हुई । अजातशत्रुने लिच्छवी गणराज्य की राजधानी वैश्ज्ञाली को जीतकर मगध साम्राज्य का हिस्सा बना लिया था। उदायिन हर्यक वंश का अन्तिम महान शासक था। पाटलिपुत्र हर्यक वंश का अन्तिम महान शासक था। पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना)की स्थापना का श्रेय उदायिन को जाता है। उदायिन ने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया ।

★ **शिशुनाग वंश**––हर्यक वंश के एक सेनापति शिशुनाग ने मगध के सिंहासन पर अधिकार करके शिशुनाग वंश की स्थापना की शिशुनाग वंश के शासन काल में राजधानी पाटलिपुत्र से बदलकर वैशाली ले जायी गयी। इस वंश के शासक कालाशोक के

शासन में दूसरी बौद्ध महासभा का आयोजन राजधानी वैशाली में हुआ । इस वंश की प्रमुख उपलब्धि अवन्ति को जीतकर मगध साम्राज्य में मिलाना था

★ नन्द वंश —— इस वंश का संस्थापक महापदमनन्द को माना जाता है। नन्द वंश का अन्तिम शासक धनानन्द था। इसी के शासन काल में सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया था।

★ नोट —— सिकन्दर का आक्रमण सिकन्दर (मकदूनिया के शासक फिलिप का पूत्र) ने 326 ई0 पू0 मे भारत पर आक्रमण किया पंजाब के राजा पोरस ने सिकन्दर के साथ झेलम नदी के किनारे **हाइडेस्पीज का युद्ध (वितस्ता का युद्ध)** लडा। परन्तु हार गा । तो व्यास नदी पर पहुंचकर सिकन्दर के सिपाहियों ने आगे अन्कार कर दिया इन्कार करने के प्रमुख कारणों में सैनिकों द्वारा लगातार युद्धों से उतन्न हताशा, नन्दों की विशाल सेना, सीमान्त प्रदेश की कष्टदायक जलवायु, घर लोटने की व्यग्रता आदि थे

वह भारत भुमि छोडकर बेबीलोन चला गया, जहाँ 323 ई. पू. मे उसकी मृत्यू हो गयी ।

मोर्य वंश

★ **चन्द्रगुप्त मौर्य(322 ई0पू0–297 ई0पू0)--**

चन्द्रगूप्त मौर्य चाणक्य की सहायता से अन्तिम नन्दवंशीय शासक धनानन्द को पराजित कर 25 वर्ष की आयु में (322ई0पू0)मगध के सिंहासन पर आसीन हुआ आथ्र मौर्य सम्राज्य की स्थापना की। चन्द्रगुप्त मौर्य ने व्यापक विजय करके प्रथम अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना की चन्द्रगुप्त मौर्य ने तत्कालीन यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर को पराजित किया। सेल्यूकस ने मेगस्थिनीज को अपने राजदूत के रूप में चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा । वृद्धावस्था में चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन मुनि भ्रदबाहु से जैन दीक्षा ली थी और श्रवणबेलगोला मे 297 ई.पू. उपवास द्वारा अपना शरीर त्याग दिया था।

★ **बिन्दूसार (297 ई0पू0–273ई0पू0)--**

चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यू के पश्चात उसका पुत्र बिन्दूसार उसका उतराधिकारी बना ।बिन्दूसार ने सूदूरवर्ती दक्षिण भारतीय क्षेत्रों को भी जीत कर मगध साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया था।

★ **अशोक(269ई0पू0–232ई0पू0)--**

यद्यपि अशोक ने 273 ई.पू. मे ही सिंहासन प्राप्त कर लिया था परन्तु 4 साल तक ग्रहयुद्ध में रत रहने के कारण अशोक का वास्तविक राज्यभिषेक 269 ई .पू. में हुआ । अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष अर्थात 261 ई.पू. मे अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया। कलिंग युद्ध में हुए व्यापक नरसंहार ने अशोक को विचलित कर दिया , जिसके परिणामस्वरूप उसने **बौद्ध धर्म** स्वीकार कर लिया । अशोक ने सांची स्तूप का निर्माण भी करवाया।

★ **शुंग वंश (184ई0पू0–74ई0पू0)--**

अन्तिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या करक उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 184 ई पूं में शुंग वंश की स्थापना की। शुंग काल में ही भागवत धर्म का विकास हुआ तथा वासुदेव विष्णु की उपासना हुई ।

★ **कण्व वंश (75ई0पू0 से 30 ई0 पू0.)--**

वासुदेव इस वंश का संस्थापक था । कण्व वंश में कुल चार शासक हुए । अन्तिम शासक सुशर्मा को हटाकर सिमूक ने सातवाहन वंश की स्थापना की ।

★ **आन्ध्र सातवाहन वंश**

इस वंश का संस्थापक सिमूक था। गौतमी पूत्र शातकर्णी (106 ई0पू0–130ई0पू0)इस वंश का सर्वाधिक महान शासक था। इस काल में तांबे तथा कांसे के अलावा सीसे के सिक्के (lead coins)काफी प्रचलित हुए।

नोट :–

जिस समय सम्पूर्ण भारत में मौर्य अपना विस्तृत साम्राज्य स्थापित कर रहे थे , ठीक उसी समय सूदूर दक्षिण में कृष्णा एवं तुगभद्र नदियों के आस–पास तीन छोटे छोटे राज्य अस्तित्व में थे –पांड्य, चोल तथा चेर ।

इस काल की जानकारी हमें उस समय में हुई तीन संगमों(संगीतियों) से प्राप्त साहित्यिक कृतियों से हुई है। इन परिषदों या संगमों का गठन पाण्ड्य राजओं के सरंक्षण में किया गया था। पाण्डयों के संरक्षण में तीन संगमों का गठन किया गया था।

★ पांड्य वंश –

इस वंश की राजधानी मदूरै थी। पांड्य वंश की राजधानी मोतियों के लिए प्रसिद्व थी ।

पांड्य शासकों के रोम साम्राज्य के साथ व्यापारिक सम्बन्ध थे एवं उन्होंने रोम सम्राट 'ऑगस्टस' के दरबार में अपने राजदूत भेजे

★ चोल वंश –

इस वंश का साम्राज्य चोलमण्डलम या कोरोमण्डल कहलाता था। इसकी राजधानी कावेरीपट्टनम/पुहार थी। ऊरेयर, कपास, के व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र था। चोल राज 'इलेरा' ने श्रीलंका को जीकर वहां 50 वर्षों तक शासन किया । इनकी आय का प्रमुख स्त्रोत कपास का व्यापार था। चोल शासक एक सक्षम नौसेना भी रखते थे ।

★ **चेर वंश** –
इनकी राजधानी 'वजी' थी (इसे केरल देश भी कहा जाता था)
इस वंश के रोम साम्राज्य के साथ व्यापारिक सम्बन्ध थे और रोम शासकों ने अपनी व्यापारिक गतिविधियों की रक्षा के लिए यहां पर दो रेजीमेंन्ट भी स्थापित कर रखी थी।

मौर्योतर काल के विदेशी राजाओं का शासन –

★ **यवन** –
उत्तर पश्चिम से पश्चिमी विदेशियों के आक्रमण मौर्योतर काल की सर्वाधिक महत्वपर्ण घटना थी इनमें सबसे पहले आक्रमणकारी बैक्ट्रिया के ग्रीक(यूनानी) थे , जिन्हें 'यवन' के नाम से जाना जाता है। मिनाण्डर या मिलिन्द(160ई0पू0–120ई0पू0)सर्वाधिक प्रसिद्ध यवन शासक था, जिसने भारत में यूनानी सता को स्थायित्व प्रदान किया था। प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक नागसेन के साथ मिलिन्द के द्वारा के गए वाद–विवाद का विस्तृत वर्णन '**मिलिन्दपान्हों** 'में है। इसके बाद मिलिन्द ने बौद्ध धर्म अपना लिया था।

★ **शक** – भारतीय स्त्रोत शकों को ' **सीथियन**' नाम देते है। यवन शासकों के पश्चात शक भारत में आए, जिन्हैंने यवन शासको से भी अधिक भू–भाग पर अधिकार किया था । शक पांच शाखाओं में विभाजित थे – **प्रथम शाखा काबुल में, द्वितीय शाखा तक्षशिला में , तृतीय शाखा मथुरा में, चतुर्थ शाखा उज्जयिनी में** तथा **पंचम शाखा नासिक** में अपना प्रभुत्व स्थापित किए हुए थी ।

★ **पल्लव (पाथियन)** –
पश्चिमोतर भारत में शकों के आधिपत्य के पश्चात पार्थियाई लोगों का अधिपत्य स्थापित हुआ। पार्थियाई लोगों का मूल निवास स्थान ईरान था। भारतीय साहित्य में इन्हैं 'पल्लव' कहा गया है। पल्लव वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक **गोन्दोफार्निस** था। इसके शासनकाल में **सेण्ट टॉमस** ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए भारत आए थे

★ **कुषाण** –
पल्लवों के पश्चात कुषाणों का भारत में आगमन हुआ । कनिष्क कुषाण वंश का सबसे प्रतापी शासक था। कनिष्क ने 78 ई में एक सम्वत् प्रचलित किया थां, इसके समय में कश्मीर के कुण्डल वन में वसुमित्र की अध्यक्षता में चतुर्थ बौद्ध संगीति आयोजित की गई थी। कनिष्क के शासन काल में बौद्ध प्रतिमा की पूजा (महायान शाखा) आरम्भ हुई । प्रसिद्ध पुस्तक 'कामसूत्र' की रचना 'वात्स्यायन' द्वारा इसी काल में की गई ।

गुप्त वंश –

★ **चन्द्रगुप्त प्रथम (319ई0पू0–335ई0पू0) –**
गुप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है। कि चन्द्रगुप्त प्रथम ही गुप्त वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था जिसकी उपाधि 'महाराजाधिराज' थी। चन्द्रगुप्त प्रथम ने '**गुंप्त सम्वत्** ' की स्थापना 319–20 ई में की थी । चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी के साथ विवाह किया था जिससे चन्द्रगुप्त की ताकत में वृद्धि हुई थी ।

★ **समून्द्रगुप्त (335ई0पू0–375ई0पू0) --**
समून्द्रगुप्त का शासनकाल राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दोनों ही दृष्टियों से गुप्त साम्राज्य के उत्कर्ष का काल माना जाता है। समून्द्रगुप्त पर प्रकाश डालने वाली अत्यन्त प्रामाणिक सामग्री '**प्रयाग प्रशस्ति**' के रूप में उपलब्ध है। समून्द्रगुप्त वंश का एक महान योद्धा तथा कुशल सेनापति था, इसी कारण उसे ' भारत का नेपोलियन' कहा जाता है। समून्द्रगुप्त एक उच्च कोटि का कवि भी था जो 'कविराज' के नाम से कविता लिखा करता था।

★ **चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (380ई0पू0–413ई0पू0)–**
चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त हो गया था। चन्द्रगुप्त द्वितीय के अभिलेखों व मूद्राओं से उसके अनेक नामों व विरूदों के विषय में पता चलता है। उसे 'देवश्री' 'विक्रम', विक्रमादित्य' 'प्रतिरथ, 'सिंहविक्रम', सिंहचन्द्र', 'परमभागवत', 'अजित विक्रम', 'विक्रमांक', आदि विरूदों से अलंकृत कहा गया है। चन्द्रगुप्त द्वितीय का काल **साहित्य** और कला का **स्वर्ण युग** कहा जाता है। इसने रजत मुद्राओं (Silver coin) का सर्वप्रथम प्रचलन करवाया था। चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में विद्वानों एवं कलाकारों को आश्रय प्राप्त था । उसके दरबार में नौ रत्न थे – कालिदास, धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बैताल भट्ट, घटकर्पर, वराहमिहिर और वररूचि। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में चीनी यात्री फाह्यान (399ई0पू0–412ई0पू0) भारत यात्रा पर आया था।

★ **कुमारगुप्त प्रथम (413ई0–455ई0) --**
गुप्त शासकों में सर्वाधिक अभिलेख कुमारगुप्त के ही प्राप्त हुए है।
कुमारगुप्त प्रथम ने अधिकाधिक संख्या में मयूर आकृति की रजत मुद्राएं प्रचलित की थी । कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल में नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी।

★ **स्कन्दगुप्त (455ई0–467ई0)** –
स्कन्दगुप्त गुप्त वंश का अन्तिम प्रतापी शासक था। स्कन्दगुप्त ने मौर्यो द्वारा निर्मित **सुदर्शन झील** का जीर्णोद्वारा करवाया था।

हुणों का गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण स्कन्दगुप्त के शासनकाल की महत्वपूर्ण घटना थी । हूण बर्बर योद्धा थै जो मध्य एशिया के खानाबदोश लोग थे स्कन्दगुप्त ने अत्याचारी हुणों को परास्त कर न केवल गुप्त साम्राज्य की रक्षा की अपितु आर्य सभ्यता एवं संस्कृति को भी नष्ट होने से बचाया ।

नोट :– स्कन्दगुप्त के बाद का कोइी भी गुप्त शासक हूणों को रोकने में सफल नहीं हो सका तथा गुप्त साम्राज्य विखण्डित हो गया ।

★ **हर्षवर्धन (पुष्यभुति वंश) (606ई0–647ई0) --**

हर्ष ने अपनी राजधानी थानेश्वर से कन्नौज स्थानान्तरित की थी दक्षिण में उसकी सेनाओं को 620 ई में चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने नर्मदा के तट से पीछे खदेड दिया था। हर्षवर्धन एक उच्चकोटि का कवि भी था। उसने संस्कृत में 'नागानन्द', रत्नावली तथा प्रियदर्शिका' नामक नाटकों की रचना की थी। हर्षवर्धन ने अपने राजदरबार में कारम्बरी और हर्षचरित के रचयिता **बाणभट्ट** सुभाषितवलि के रचयिता **मयूर** और चीनी विद्वान ह्वेनसांग (सी–यू–की का रचयिता) को आश्रय प्रदान किया था। हर्ष प्रयाग के संगम के पास प्रति पांच वर्षो में एक समारोह आयोजित करता था। जिसमें वह खूब दान करता था।

★ **पाल वंश** –

पाल वंश की स्थापना बौद्ध धर्म के अनुयायी गोपाल(750-770ई0)ने की थी, धर्मपाल (गोपाल का पूत्र) ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की तथा नालन्दा विश्वविद्यालय का जीर्णोद्वारा कराया ।

देवपाल(810-850ई0)इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। देवपाल ने उडीसा व असम को जीता तथा प्रतिहार राजा भोज व राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष को हराया । इसके बाद बने शासक महीपाल को राजेन्द्र चोल ने आक्रमण कर पराजि किया ।

★ **बादामी के चालुक्य** –

इस वंश का संस्थापक पुलकेशिन प्रथम (535-566ई0) था। इस वंश की राजधानी वातापी(आधुनिक बादामी) थीं । पुलकेशिन द्वितीय, वातापी के चालुक्य राजवंश का सर्वाधिक योग्य व साहसी शासक था। उसने हर्षवर्धन को नर्मदा तट पर पराजित किया । पुलकेशिन द्वितीय ने पर्शिया के राजा खुसरो द्वितीय के दरबार में अपना दूत भेजा । ह्वेनसांग पुलकेशिन द्वितीय के शासनकाल में चालुक्य साम्राज्य की यात्रा पर आया । चालुक्य उस समय की जलसैन्य शक्ति के रूप में प्रसिद्ध थै ।

★ **राष्ट्रकूट वश** –

प्रारम्भ में राष्टकूट बादामी के चालूक्यों के सामन्त थे । इस वंश का संस्थापक दन्तिदूर्ग था। इस वंश का प्रसिद्ध शासक कृष्ण प्रथम एक महान निर्माता था। उसने एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर का निर्माण करवाया।

अमोघवर्ष (814ई0–876ई0) धर्म और साहित्य मे विशेष रूचि रखता था। वह विद्वानों एवं कलाकारें का आश्रयदाता था। उसने पहली कन्नड कविता ' कविराज मार्ग' तथा 'प्रश्नोतर मल्लिका' लिखीं । इस वंश के शासक कृष्ण तृतीय ने एक विजय स्तम्भ तथा रामेश्वरम मे एक मन्दिर का निर्माण करवाया।

★ **पल्लव वंश** –

पल्लव वंश का वास्तविक संस्थापक सिंहविष्णु (574ई–600ई0) को माना जाता है। इस वंश की राजधानी कांची थी। नरसिंहवर्मन (630ई0–668ई0) पल्लव वंश का सर्वाधिक यशस्वी शासक था। नरसिंहवर्मन ने महाबलीपुरम नगर की स्थापना की तथा महाबलीपुरम के प्रसिद्ध एकात्मक रथों(सात पैगोडा) का निर्माण भी उसी ने करवाया। नरसिंहवर्मन के ही शासनकाल में ह्वेनसांगने कांची की यात्री की थी।

★ **गंग वंश** –

गंग शासक नरसिंह देव ने कोणार्क का प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर बनावाया। गंग वंश के ही शासक अनन्तवर्मन ने पूरी के प्रसिद्ध जगन्नाथपूरी मन्दिर का निर्माण करवाया। गंग वंश ने पहले उडीसा में शासन करने वाले केसरी शासको ने भूवनेश्वर ने प्रसिद्ध लिंगराज मन्दिर का निर्माण करवाया था।

★ **चौल वंश** –

इस वंश का संस्थापक विजयालय (846ई0–871ई) था। यद्यपि चोलों का प्रारम्भिक इतिहास संगम युग(तीसरी शताब्दी ई0पू0)से आरम्भ होता है। परन्तु इस वंश का राजनीतिक उत्कर्ष नवीं शताब्दी ई0 में हुआ । इनकी राजधानी तंजौर(आधुनिक थंजावुर)थी। राजराज प्रथम को इस वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उसने सम्पूर्ण दक्षिण भारत में अपना विजय परचम लहराया । उसने उतरी श्रीलंका को विजित कर इसका नाम ' मुमाडी चोलमण्डलम् ' रखा । उसने तंजौर में प्रसिद्ध 'राजराजेश्वर मन्दिर' (बृहदेश्वर शिव मन्दिर)का निर्माण करवाया । भगवान शिव की नृत्य दर्शाती कलाकृति 'नटराज' इसी काल से सम्बधित है। चोलों के शासनकाल मे ही कला की 'गोपूरम' शैली का जन्म हुआ । इस शासनकाल मे स्थानीय सरकार

हुआ करती थी(वर्तमान के पंचायती राज का सिद्धांत यहीं से लिया गया है। राजराज प्रथम की मृत्यू के पश्चात उसका पुत्र राजेन्द्र प्रथम (1014ई0–1044ई0) शासक बना ।
राजेन्द्र प्रथम ने 1017 ई0 में सम्पूर्ण श्रीलंका को विजित कर यहां के शासक महिन्द्र मंचम को बन्दी बनाकर रखा । उसने पांडयों और चेरों के राज्यों को भी विजित किया था। राजेन्द्र प्रथम ने बंगाल के पाल शासक महीपाल को भी पराजित किया इस विजय के उपरात उसने 'गंगईकोंड' की उपाधि ग्रहध की।

★ **मध्यकालीन भारत के प्रमुख वंश एवं शासक**

नोट :– मोहम्मद बिन कासिम, भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम अरब मुस्लिम था जिसने सिन्ध पर मूल्तान को (712 ई. में)जीत लिया था। उस समय सिंध का शासक ब्राह्मणवंशी राजा दाहिर था। भारत पर प्रथम तर्क आक्रमण 986 ई में गजनी के शासक सुबुक्तगीन ने किया।

★ **महमूद गजनवी** –

महमूद गजनवी अपने पिता की मृत्यू के बाद 997 ई में गजनीके सिंहासन पर बैठा । महमूद गजनवी ने भारत पर 1001 ई से 1027 ई के बीच 17 आक्रमण किये । उसके आक्रमणों का उद्देश्य यहां के धन को लूटना एवं इस धन की सहायता से मध्य एशिया मे विशाल साम्राज्य की स्थापना करना था । उसने पंजाब के हिन्दुशाही वंश के शासक जयपाल को वैहिन्द की प्रथम लडाई (1001 ई.) में पराजित किया। वैहिन्द की द्वितीय (लडाई 1008 ई) मे उसने हिन्दुशाही वंश के ही आनन्दपाल को हराया । उसने थानेश्वर, कन्नौज, मथूरा, सोमनाथ, आदि नगरों का विध्वंश कर दिया था।
1025 ई में उसका सोमनाथ के शिव मन्दिर पर आक्रमण सबसे प्रसिद्ध है।

★ **मोहम्मद गौरी (1175ई0–1206ई0)** --

महमूद गजनवी के विपरीत, मोहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमण का उद्देश्य भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना करना था। इस समय के दौरान दिल्ली पर चौहान वंश के पृथ्वीराज चौहान तृतीय का शासन था। मोहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच दो लडाईयाँ हुई– तराईन का प्रथम युद्ध(1191ई0)जिसमें गौरी की पराजय हुई तथा तराईन का द्वितीय युद्ध (1192ई0)जिसमें पृथ्वीराज की पराजय हुई ।
तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद मोहम्मद गौरी ने दिल्ली और अजमेर पर कब्जा कर भारत में मुस्लिम साम्राज्य की नींव डाल दी (गोरी को ही भारत में मुस्लिम साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है।)
1194 ई. में चंदावर के युद्ध मे मोहम्मद गौरी ने कन्नौज के राजा जयचन्द को हराया। 1206 ई में गौरी, कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत का नेतृत्व सौंपकर अपने गृहप्रान्त की और चला। रास्ते मे कुछ विद्रोहियों ने अचानक हमला कर उसकी हत्या कर दी ।

★ **गुलाम वंश (1206 ई.–1290 ई.)** –

★ **कुतबुद्दीन (1206–1210 ई .)** –

पहले इसकी राजधानी लाहौर थी और बाद में दिल्ली बनी। इसने कुतुबमीनार का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया । कुतुबमीनार का नाम प्रसिद्ध सूफी सन्त ख्वाजा कुतुबद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर रखा गया। इसने भारत की प्रथम मस्जिन (कुव्वत–उल–इस्लाम) दिल्ली में और अढाई दिन का झोंपडा अजमेर में बनवाया। इसकी मृत्यू लाहौर में चौगान(पोला)खेलते हुए घोडे से गिरकर हुई ।

★ **इल्तुतमिश (1210ई–1236ई)** –

इसने कुतुबमीनार को बनवाकर पूरा किया और राज्य को सुदृढ व स्थित बनाया । इल्तुतमिश ने इक्ता व्यवस्था शुरू की । इसके तहत सभी सैनिकों व गैर –सैनिकों अधिकारियों को नकद वेतन के बदले भूमि प्रदान की जाती थी । इल्तुतमिश ने चाँदी के 'टका' तथा ताँबे के जीतल का प्रचलन किया । उसने बगदाद के खलीफा से मान्यता प्राप्त की और ऐसा करने वाला वह प्रथम मुस्लिम शासक बना ।
उसने चालीस योय तुर्क सरदारों के एक दल चालीसा(चहलगानी) का गठन किया जिसने इल्तुतमिश की सफलताओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

★ **रजिया सुल्तान (1236ई–1240ई)** –

रजिया दिल्ली की प्रथम व अन्तिम मुस्लिम महिला शासक थी रजिया ने सैनिक वेशभूषा धारण की, परदा करना बन्द कर दिया और हाथी पर चढकर जनता के बीच जाना शुरू किया। रजिया ने अबीसिनिया निवासी एक गुलाम मलिक जलालुद्दीन याकृत को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया और उसे 'अमीर–ए– आखुर' अर्थात अश्वशाला प्रधान के पद पर नियुक्त कर दिया ।
इससे अमीर वर्ग (तुर्की अधिकारी) नराज हो गया । भटिण्डा के सूबेदार अल्तूनिया ने विद्रोह कर याकूत की हत्या कर दी तथा रजिया को बन्दी बना लिया । रजिया को कूटनीतिक दृष्टिकोण से अल्तूनिया से शादी करनी पडी ।
इसी बीच इल्तुतमिश के एक पुत्र बहरामशाह ने सता हथिया ली तथा भटिण्डा से दिल्ली आते वक्त अल्तुनिया व रजिया को हराकर उनका वध कर दिया ।

रजिया के बाद बहराम शाह, अलाउद्दीन मसूदशाह तथा नसीरूद्दीन महमूद ने शासन किया, परन्तु ये अयोग्य थे और बलबन ने सता हथिया ली ।

★ **बलबन (1266ई–1286ई) –**

बलबन ने अपने विरोधिओं की समाप्ति के लिए लौह एवं रक्त की नीति (खून का बदला खून) का अनुपालन किया । बलबन ने गद्दी पर बैठते ही चालीसा को नष्ट कर दिया । बलबन ने राज्य मे दैवीय राजत्व का सिद्धांत का प्रतिपादित किया। इसके, बलबन ने अपने आपको नियाबत–ए– खुदाई' अर्थात ईश्वर का प्रतिनिधि तथा ' जिल्ले–ए–इलाही' अर्थात ईश्वर की छाया बताया ।

बलबन ने पारसी–नववर्ष की शुरूआत पर मनाये जाने वाले उत्सव ' नौरोज' की भारत में शुरूआत की। सुल्तान की प्रतिष्ठा बढाने के लिए बलबन ने दरबार में ' सिजदा' (घुटनों के बल बैठकर सुल्तान के सामने सिर झुकाना) तथा ' पाबोस' (पेट के बल लेटकर सुल्तान के पैरों को चुमना) प्रथाएँ शुरू की।

बलबन ने वित विभाग (दीवान–ए–विजारत) को सैन्य विभाग से अलग कर नये सैन्य विभाग (दीवान–ए– आरिज) की स्थापना की।

★ **खिलजी वंश (1290 ई.–1296ई.) --**

जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290ई0–1296ई0) --

यह दिल्ली सल्तरत का प्रथम शासक था जिसका हिन्दु जनता के प्रति दृष्टिकोण था। सुल्तान के भतीजे अलाउद्दीन ने देवगिदि के यादव राजा को हराकर अपार धन अर्जित किया और अन्ततः धोखे से अपने चाचा की हत्या करवा दी ।

★ **अलाउद्दीन खिजजी (1290ई0–1316ई0) --**

अलाउद्दीन दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था, जिसने दक्षिण भारत में विजय पताका फहरायी। अलाउद्दीन के दक्षिण भारतीय अभियान का नेतृत्व सेनापति मलिक काफूर ने किया था। 'हजारदीनारी' मलिक काफूर को अलाउद्दीन ने गुजरात से हजार दीनार में खरीदा था। सर्वप्रथम उलेमा वर्ग के प्रभाव तथा मार्ग प्रदर्शन से स्वतंत्र होकर राज्य करने का श्रेय अलाउद्दीन को ही प्राप्त है

अलाउद्दीन ने अलाई दरवाजा, हौजखास, सीरी फोर्ट, जमात खाना मस्जिद का निर्माण करवाया । तथा अपनी राजधानी सीरी को ही बनाया ।

अलाउद्दीन खिलजी को द्वितीय सिकन्दर कहा जाता है। वह प्रथम शासक था जिसने पहली बाद स्थायी सेना गठित की तथा सैनिकों को नकद वेतन दिये जाने की शुरूआत की ।

पहली बार घोडों को दागने की प्रथा तथा सैनिकों के लिए हुलिया प्रणाली की शुरूआत की

अलाउद्दीन ने बाजार में सभी आवश्यक वस्तुओं के दाम निर्धारित कर दिये थे।

उसके दरबार मे अमीर खूसरो व हसन दहलवी जैसे कवि थे । अमीर खूसरो ने सितार का आविष्कार किया व वीणा को संशोधित किया । उसे 'तोता–ए–हिन्द' कहा जाता है।

तुगलक वंश (1320ई0–1414ई0) --

★ **ग्यासूद्दीन तुगलक(1320ई0–1325ई0)** –इसने सिंचाई के साधनों, विशेषकर नहरों का निर्माण करवाया तथा अकाल संहिता का निर्माण किया।

ग्यासुद्दीन ने दिल्ली के निकट तुगलकाबाद नामक नगर बसाकर इसे अपनी राजधानी बनाया ।

★ **मोहम्मद बिन तुगलक (1325ई0–1351ई0)--**

इसे इतिहास में एक बुद्धिमान मूर्ख शासक के रूप में जाना जाता है। इसने अपने जीवनकाल में दौरान पांच ऐसे महत्वपूर्ण फैसले किए जो विफल हो गये –

कर वृद्धि– सुल्तान ने दोआब क्षेत्र में कर में वृद्धि ऐसे समय में की जब वहाँ पर अकाल पडा था और फिर प्लेग एक महामारी के रूप में फैल गया । इस प्रकार सुल्तान की यह योजना विफल रहीं।

राजधानी का स्थानान्तरण–इसने 1327 ई0 में अपनी राजधानी दिल्ली से देवगिरि (दौलताबाद) स्थानान्तरित की ताकि उतर एवं दक्षिण भारत के सम्पूर्ण सम्राज्य को नियन्त्रित किया जा सके । लेकिन न तो आम जनता इसके महत्व को समक्ष सकी और नही इस प्रकार नियन्त्रण रखना सम्भव हो सका इसलिए यह योजना विफल हो गयी ।

सांकेतिक मुद्रा– मोहम्मद बिन तुगलक ने चाँदी के सिक्कों के स्थान पर ताँबे की सांकेतिक मुद्रा चलायी । इसका उद्देश्य सोने–चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं को नष्ट होने से बचाना था, परन्तु बडे स्तर पर नकली सिक्कों का निर्माण शुरू हो गया। इसलिए मोहम्मद बिल तुगलक ने बाजार से सभी तांबे के सिक्के लेकर सरकारी खजाने से उनके बदले में चांदी के सिक्के दे दिए। इससे खजाना खाली हो गया और यह योजना विफल हो गयी ।

खुरासान अभियान–इसके तहत सुल्तान ने मध्य एशिया में स्थित खुरासान राज्य में उत्पन्न अव्यवस्था का लाभ उठाकर वहाँ कब्जा करने की सोची ।इसके लिए अतिरिक्त सेना का गठन किया और एक साल का वेतन पेशगी दे दिया, परन्तु खुरासन में

व्यवस्था कायम हो जाने के कारण सुल्तान की यह योजना भी विफल रही।

करािचल अभियान– कुमाऊँ पहाडियों में स्थित कराचिल का विद्रोह दबाने और उसे विजित करने क उद्देश्य से सुल्तान ने अपनी सेना भेजी, परन्तु आरम्भिक सफलता के बाद वहाँ सुल्तान को जन व धन की भारी हानि उठानी पडी ।

–उसने नासिक के विकास के लिए 'दीवरन–ए–कोही' नामक विभाग की स्थापना की ।

–उसके अन्तिम दिनों में लगभग सम्पूर्ण दक्षिण भारत स्वतंत्र हो गया था और विजयनगर, बहमनी , मदूरै आदि स्वतन्त्र राज्यों की स्थापना हो गयी थी। 1334 ई में मोरक्कों का प्रसिद्ध यात्री इब्नबतुता भारत आया । उसने दिल्ली में आठ वर्षो तक काजी का पद सम्भाला ।

★ **फरोजशाह तुगलक (1351ई0–1388ई0)** –

उसने सेना मे वंशवाद को बढावा दिया तथा सैनिकों को वेतन के रूप में भुमि प्रदान की उसके शासन काल में सेना में भ्रष्टाचार फैल चुका था। फिरौजशाह ने हिसार, फिरोजाबाद, फतेहाबाद, फिरोजशाह कोटला, जौनपुर आदि नगरों की स्थापना की ।

उसने आकाशीय बिजली से ध्वस्त हुई कुतुबमीनार की 5वीं मंजिल का पुनर्निर्माण करवाया। वह मेरठ तथा टोपरा (Ambala) स्थित अशोक स्तम्भों को दिल्ली ले गया तथा फिर अपनी नयी राजधानी फिरोजाबाद में उन्हें स्थापित किया । उसने दासों के लिए एक नये विभाग 'दीवान–ए– बन्दागान' की स्थापना की (उसके पास 1,80,000 गुलाम थे)

उसने फारसी भाषा में अपनी आत्मकथा 'फुतुहत–ए–फिरोजशाही' की रचना की। प्रसिद्ध इतिहासकार बरनी उसका दरबारी था। उसने 'तारीख–ए–फिरोजशाही तथा 'फतवा–ए–जहाँदरी नामक प्रसिद्ध पुस्तकें लिखीं।

★ **नोट :– तैमूर का आक्रमण** – 1398 ई. में मध्य एशिया के दूर्दान्त आक्रमणकारी तैमूर लंग ने भारत पर आक्रमण किया। तैमूर के आक्रमण के समय, तुगलक वंश का शासक नसीरूद्दीन महमूद तुगलक था। तैमूर ने निर्दोष लोगों को बेरहीम से कत्ल किया और भंयकर लूटपाट की। भारत पर आक्रमण के दैारान खिज्र खां ने तैमूर की बहुत सहायता की । वापस लौटते समय तैमूर ने जीते गए क्षेत्रों लाहौर, मूल्तान, दीपालपुर, आदि का प्रशासन खिज्र खाँ को सोंप दिया ।

सैयद वंश (1414ई–1451ई) – सैयरद वंश की स्थापना खिज्र खाँ (1414ई–1421ई) ने की थी। सल्तनत काल में शासन करने वाला यह एक मात्र 'शिया वंश' था। खिज्र खाँ के उतराधिकारी (मुबारक शाह, माहम्मदशाह, अलाउद्दीन, आलमशाह)अयोग्य थे । जिससे बहलोल लोदी को मौका मिला जिसने लोदी वंश की स्थापना की ।

★ **लोदी वंश (1451ई.–1526 ई.)–** इस वंश की स्थापना बहलोल लोदी ने की थी। दिल्ली सल्तनत में शासन करने वाला यह प्रथम अफगान वंश था।

★ **बहलोल लोदी (1451 ई.–1489 ई.) –** उसने बहलोल सिक्के प्रचलित किए । उसने जौनपुर के शर्की राज्य को विजित कर दिल्ली सल्तनत में सम्मिलित किया

★ **सिकन्दर लोदी (1489 ई.–1517 ई.)** – यह लोदी वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक था। सिकन्दर लोदी ने भुमि मापन हेतू ' गज–ए–सिकन्दरी' नामक पैमाने का प्रचलन किया। उसने कुशल सैन्य व्यवस्था एवं गुप्तचर प्रणाली गठित की। उसने 1504 ई में आगरा शहर की स्थापना की और 1506 ई में इसे अपनी राजधानी बनाया। सिकन्दर लोदी 'गुलरूखी' के उपनाम से फारसी में कविताएँ लिखता था। उसने कुतुबमीनार की मरम्मत करायी ।

★ **इब्राहिम लोदी (1517ई.–1526 ई.)** – यह दिल्ली सल्तनत तथा लोदी वंश का अन्तिम शासक था। इब्राहिम लोदी 1526 ई के पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर के हाथों मारा गया और दिल्ली सल्तनत का काल समाप्त हो गया।

मुगल वंश (1526 ई0–1857 ई0) –

★ बाबर (1526 ई.–1530 ई.) –वह अपने पिता की तरफ से तैमूर (तुर्क) का तथा माता की तरफ से चंगेज खाँ (मंगोल) का बंशज था। बाबर द्वारा निम्न महत्वपूर्ण युद्ध लडे गये–

1. पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई.)– इसमें बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराकर भारत में मुगल वंश की स्थापना की ।
2. खानवा का युद्ध (1527 ई.) – इसमें बाबर ने राणा सांगा को पराजित किया।
3. चंदेरी का युद्ध (1528 ई.) – इसमें बाबर ने मेदिनीराय को पराजित किया।
4. घाघरा का युद्ध (1529 ई.) – इसमें बाबर ने महमूद लोदी (इब्राहिम लोदी का भाई जो अफगानों को संगठित करके लाया था)को पराजित किया ।

बाबर ने तुर्की भाषा में उपनी आत्मकथा 'तुजुक –ए– बाबरी' (बाबरनामा) लिखी ।

★ **हुमायूँ (1530 ई.–1540 और 1555 ई.–1556 ई.)**

हुमायूँ ने राज्यभिषेक के बाद अपना राज्य अपने तीन भाइयों (कामरान, असकरी, हिन्दाल) में बांट दिया जो राजनीतिक दृष्टि से उसकी सबसे बडी भूल थी।उसका प्रमुख शत्रु शेरशाह सूरी था जिसने उसे चौसा के युद्ध (1539 ई.) में पराजित किया । और 1540 ई. में कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध में पराजित करके भारत से बाहर चले जाने के लिए बाध्य कर दिया।

1. **प्रथम–** 1530 ई–1540 ई
2. **द्वितीय**– 1555 ई.–1556 ई

1556 ई. में दिल्ली में 'शेरमण्डल' नामक पुस्तकालय की सीढियों से लुढककर हुमायूँ की मृत्यू हो गयी ।
हुमायूँ की सौतेली बहन गुलबदन बेगम ने ' हुंमायूँनाम ' लिखी ।

★ **अकबर (1556ई.– 1605 ई.)** –

अकबर का जन्म 1542 ई में हुमायूँ के प्रवास काल के दौरान, अमरकोट में हुआ 14 वर्ष की आयु में अकबर का राज्यभिषेक 1556 ई. मे कालानौर में हुआ । 1560 ई तक अकबर ने बैरम खाँ के संरक्षण में शासन किया । बैरम खाँ को वकील नियुक्त किया गया ।

सिंहासन पर बैठते ही अकबर ने बैरम खां की सहायता से 1556 ई. में **पानीपत को द्वितीय युद्ध** में हेमू ' विक्रमादित्य' को पराजित किया। 1575 ई के 'हल्दीघाटी' के प्रसिद्ध युद्ध में अकबर के सेनापति राजा मानसिंह ने मेवाड के शासक महाराणा प्रताप को पराजित किया। 1575 ई में अकबर ने आगरा से 36 किमी. दूर फतेहपूर सीकरी नामक नगर की स्थापना की और उसमें प्रवेश के निए 'बुलन्द दरवाजा' बनावाया। बुलन्द दरवाजा अकबर ने गुजरात जीतने के उपलक्ष में बनाया। इसी वर्ष अकबर ने फतेहपुर सीकरी में धार्मिक परिचर्चाओं हेतू 'इबादतखाने' की स्थापना की ।
1582 ई . में अकबर ने सभी धर्मो के उतम सिद्धांन्तों को लेकर 'तौहीद–ए–इलाही ' या 'दीन–ए–इलाही नामक नये धर्म की स्थापना की। अकबर के दरबार में 'नवरत्न' के नाम से प्रसिद्ध नौ व्यक्ति थे –
बीरबल, मानंसिंह, फैजी, टोडरमल, अब्दूर्रहीम, खानाखाना, अबुल फजल, तानसेन, भगवान दास, मुल्ला दो प्याजा।

★ **जहाँगीर(1605 ई.– 1627 ई)** –

सिंहासन पर बैठते ही जहांगीर के पुत्र खुसरो ने विद्रोह कर दिया जिसे जहांगीर ने पकडवाकर अन्धा करवा दिया । जहांगीर ने सिखों के पांचवें गुरू , गुरू अर्जुन देव को, शहजादे खुसरो की सहायता करने के कारण फांसी लगवा दी गयी।
जहांगीरका विवाह 1611 ई में शेर–ए–अफगान की विधवा महरूनिसां से हुआ जो बाद में नूरजहां के नाम से प्रसिद्ध हुई ।
नूरजहां का जहांगीर के शासनकाल में काफी दखल था जहांगीर के शासनकाल में मुगल चित्रकला चरमोत्कर्ष पर थी ।उसने राज्य की जनता को न्याय दिलाने हेतू न्याय की प्रतीक सोने की जंजीर को बपने महल के बाहर लगवाया। जहांगीर ने फारसी में अपनी आत्मकथा 'तुजुक–ए– जहांगीरी की रचना की । जहांगीर के शासनकाल में प्रथम अंग्रेज मिशन कैप्टन हाकिन्स के नेतृत्व में मुगल दरबार में आया (1608 ई.–1611 ई .)

★ **शाहजहाँ(1627 ई0–1658 ई0)** –

शाहजहां ने दिल्ली के निकट शाहजहांनाबाद नगर की स्थापना की और आगरा से राजधानी इस स्थान पर परिवर्तित की इसे आजकल पुरानी दिल्ली के नाम से जाना जाता है। इसी में उसने सुरक्षा दूर्ग का निर्माण कराया जिसे 'लाल किला' या 'किला–ए– मुबारक के नाू से जाना जाता है। उसने इसी किले में दीवान–ए– आम व दीवान–ए–खास का निर्माण करवाया। उसने स्वयं अपना व अपनी बेगम मुमताज महल का मकबरा आगरा में बनवाया जो ताजमहल के नाम से प्रसिद्ध है।
तालमहल का वास्तुविद् उस्ताद ईशा खाँ था। इसके अलावा शाहजहां ने आगरा में मोती मस्जिद तथा दिल्ली में जामा मस्जिद का निर्माण करवाया (दिल्ली के लाल किले मे स्थित मोती मस्जिद का निर्माण औंरगजेब ने करवाया था।)
शाहजहां के शासन काल को द्वितीय स्वर्ण काल कहा जाता है। शाहजहां के पुत्र दारा शिकोह, शुजा, औंरगजेब व मुराद थे। शाहजहां के बीमार होने पर उसके पुत्रों में उतराधिकार प्राप्त करने के लिए युद्ध शुरू हो गया। 1658 ई में औंरगजेब ने विजय प्राप्त करते हुए राजधानी पर अधिकार कर लिया तथा शाहजहां को गिरफ्तार कर आगरा किले में कैद कर लिया। इसी स्थान पर 1666 ई में शाहजहां की मृत्यू हो गयी ।

★ **औंरगजेब (1658 ई –1707 ई)** – यह औंरगजेब आलमगीर के नाू से सिंहासन पर बैठा । उसने उलेमा वर्ग की सलाह के अनुसार इस्लामी ढंग से राज किया। औंरगजेब के समय में मुगल साम्राज्य क्षेत्रफल की दुष्टि से चरमोत्कर्ष पर था। उसका मकबरा औंरगाबाद में स्थित है।

सूरी वंश –

★ **शेरशाह सूरी** – शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को हराकर 1540 इ से 1545 ई तक भारत पर राज किया। शेरशाह का असली नाम फरीद था उसे शेरखान की उपाधि बिहार के गवर्नर बाबरखान लोहानी ने दी थीं । कालिंजर का अभियान, शेरशाह का अन्तिम सैन्य अभियान था। इसमें एक गोले के विस्फोट से शेरशाह की मृत्यू हो गयी थी। (1545ई)
शेरशाह के काल में मलिक मोहम्मद जायसी ने हिन्दी में 'पद्मावत्' की रचना की थी। शेरशाह सूरी ने सिन्धु नदी से बंगाल तक शेरशाह सूरी मार्ग (ग्रांड ट्रंक रोड.) का निर्माण करवाया । शेरशाह का मकबरा **सहसराम (Bihar)** में स्थित है। उसने चाँदी का रूपया व तांबे का 'दाम' प्रचलित किया।

★ **मैसूर राज्य** –हैदरअली के नेतृत्व में मैसूर एक ताकतवर राज्य क रूप में उभरा (1761ई.) हैदरअली ने अपन सेना को पश्चिमी सैन्य प्रशिक्षण दिया एवं अंग्रेजरों को प्रथम आंग्ल–मैसूर युद्ध(1767ई.–1769ई.) में पराजित किया। द्वितीय आंग्ल–मैसूर युद्ध

(1782 ई.) में हैदरअली की लडते हुए मृत्यू हो गयी। और उसके बेटे टीपू सुल्तान ने उसका स्थान लिया। टीपू ने फ्रांसीसी पद्धति अपनाते हुए एक मजबूत सेना बनायी और प्रशासन मे भी कुशल फेरबदल किये ।

तृतीय आंग्ल–मैसूर युद्ध(1789 ई.–1792ई.) में अंग्रेज , निजाम और मराठों ने मिलकर टीपू को हरा दिया और उसे श्रीरंगापट्टनम की संन्धि करनी पडी ।

चतुर्थ आंग्ल–मैसूर युद्ध 1799 ई. में लार्ड वेलेजली ने टीपू को मारकर मैसूर राज्य पर कब्जा कर लिया था।

★ **मराठा वंश –**

मराठा शक्ति का उदय शिवाजी के नेतृत्व में 17 वीं शताब्दी में हुआ । शिवाजी का जन्म 1627 ई में पूना के शिवनेर किले में हुआ। शिवाजी के पिता शाहजी भौसले और माता जीजाबाई थी। शिवाजी के गुरू समर्थ स्वामी रामदास थ। शिवाजी ने धीरे–धीरे अलग–अलग दूर्गो पर अधिकार करके अपनी ताकत बढायी । बीजापुर के सुल्तान अली आदिल शाह ने अफजल खॉं को शिवाजी को सबक सिखाने के लिए भेजा परन्तु शिवाजी ने उसे मार दिया । इसी तरह औरंगजेब द्वारा भेजे गए शाइस्ता खॉं को भी शिवाजी ने भगा दिया । औरंगजेब ने 1665 ई में राजा जयसिंह को शिवाजी से लडने के लिए भेजा । राजा जयसिहं ने शिवाजी को पुरन्दर की संन्धि करने पर विवश किया जिसमें शिवाजी के काफी दुर्ग मुगलों के पास चले गये । शिवाजी को 1666 ई में उनके पुत्र शम्भा जी के साथ आगरा में नजरबन्द भी किया गया परन्तु वे वहां से भाग निकले । 1674 ई में शिवाजी ने रायगढ क दुर्ग में महाराष्ट्र के स्वतंन्त्र शासक के रूप में अपना राज्यभिषेक कराया और 'छत्रपति' की उपाधि ग्रहध की । शिवाजी की मृत्यू 1680 ई. में हुई । शिवाजी के प्रशासन की मुख्य विशेषता 'अष्ट प्रधान' यानि उनके आठ प्रमुख मंत्री थे।

★ **सिक्ख**

★ **सिक्ख धर्म गुरू और उनके कार्य**

समय(गुरू–काल)	**सिक्ख गुरू**	**कार्य**
1469 ई. से 1539 ई.	गुरू नानक देव	सिक्ख धर्म की स्थापना , आदि ग्रन्थ की रचना
1539 ई .से 1552 ई.	गुरू अंगद	गुरुमुखी लिपि क`जनक
1552 ई. से 1574 ई.	गुरू अमरदास	धर्म प्रसार हेतू 22 गद्दीयों की स्थापना
1574 ई. से 1581 ई.	गुरू रामदास	अमृतसर की स्थापना (1577ई.)
1581 ई से 1606 ई.	गुरू अर्जुन देव	श्री हरमन्दिर साहिब या स्वर्ण मन्दिर की नीव रखी' गुरू ग्रन्थ साहब का संकलन
1606 ई से 1645 ई.	गुरू हरगोविन्द	'अकाल तख्त' की स्थापना , सिक्खों को सैनिक जाति में बदलना ।
1645 ई. से 1661 ई.	गुरू हरराय	उतराधिकार (मुगलों के) युद्ध में भाग
1661 ई. से 1664 ई	गुरू हरकिशन	अल्पव्यस्क अवस्था में ही मृत्यू
1664 ई. से 1675 ई	गुरू तेग बहादूर	हिंदू धर्म की रक्षा के लिए औरंगजेब द्वारा सिर कटवा दिया गया
1675 ई. से 1708 ई	गूरू गोविन्द सिंह	'खालसा' पंथ की स्थापना , अन्तिम गुरू

यूरोपियों का भारत आगमन

पुर्तगाली –1498 ई. में वास्कोडिगामा केरल के कालीकट नामक नगर में समुद्री मार्ग से पहुचां ।
1509 ई में पुर्तगाली गवर्नर अल्बुकर्क भारत आया और उसने कोचीन में एक दुर्ग बनवाया।
1510 ई मे उसने गोवा पर अधिकार कर लिया । अल्बूकर्क को भारत में पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत में तम्बाकू की खेती ,जहाज निर्माण एवं प्रिटिंग प्रेस का सूत्रपात (1656 ई.) में हुआ।

डच – 1602 ई. मे यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कम्पनी ऑफ दी नीदरलैण्ड्स अस्तित्व में आयी। 1605 ई में पहली फैक्ट्री मसूली पट्टनम मे स्थापित की गई । अन्य फैक्ट्रिया – पुलीकट, चिनसूरा, पटना, बालासार, नागापट्टनम, कोचीन, सूरत, कारीकल, कासिम बाजार मे स्थापित की गयी।

अंग्रेज – ईस्ट इण्डिया कम्पनी 1600 ई की स्थापना ब्रिटिश सरकार द्वारा कुछ व्यापारियों को चार्टर प्रदान करने के साथ हुई जेम्स प्रथम के राजदूत टामस रो ने जहांगीर से सूरत फैक्टरी खोलने तथा व्यापार करने की आज्ञा प्राप्त कर ली थी। 1757 ई में प्लासी के युद्ध में क्लाइव ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दोला को हराकर भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव रखी । 1764 ई में

बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों ने शाहआलम (मुगल सम्राट) शुजाउद्दौला (अवध का नवाब) और मीर कासिम(बंगाल का नवाब)की संयुक्त सेनाओं को हराकर अग्रेंजी राज्य दिल्ली तक फैला दिया।

1818 ई में अंग्रेजों ने मराठा शक्ति को पूर्णतया समाप्त कर दिया गया। 1849 ई के चिलियानवाला के युद्ध में सिक्ख शक्ति का अन्त करके पंजाब समेत पूरे भारत को अपने राज्य मे मिला लिया।

डेन – डेनमार्क की ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना 1616 ई में हुई थी इस कम्पनी ने त्रेंकोबार(Tamilnadu) और सेरामपूर(Bangal) में अपनी व्यापारिक काठियां स्थापित की थी।

फ्रांसीसी – फ्रांसीसी सम्राट लुई चौदहवें के मंत्री कॉलबर्ट द्वारा 1664 में 'फ्रेच इस्ट इडिया कम्पनी ' की स्थापना की गई इन्होंने 1667 ई में सूरत में अपनी पहली फेक्ट्री खोली । 1742 ई में डूप्ले नामक फ्रेंच गवर्नर भारत में आया । वह बहुत महत्वकांक्षी था। परन्तु 1760 ई में वांडीवास के युद्ध में उसे क्लाइव के कारण अग्रेजों से पराजय देखनी पडी ।

बंगाल के गवर्नर जनरल –

वारेन हेस्टिंग्स (1772 ई–1785 ई) - 1772 ई में द्वैध शासन की समाप्ति की घोषणा की ।
रेग्यूलेटिंग एक्ट 1773 ई में कोलकाता में एक सुप्रीम कोर्ट स्थापित किया गया सर विलियम्स जॉस द्वारा 1784 ई में हेस्टिंग्स के समय 'द एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की गई । पिट्स इण्डिया एक्ट 1784 के विरोध में इस्तिफा देकर जब वह इग्लेण्ड पहुचां तो बर्क द्वारा उस पर महाभियोग चलाया गया । हालांकी 7 साल की सुनवाई के बाद उसे छोड दिया गया था।

लार्ड कॉर्नवालिस (1786 ई– से 1793 ई तक) – 1793 ई में बंगाल में स्थायी 'बन्दोबस्त' लागु किया गया । जिसके तहत जमीदारों को अब भू राजस्व का 10/11 भाग कम्पनी को देना था तथा 1/11 भाग अपनी सेवाओं के लिए अपने पास रखना था। कार्नवालिस को भारत में प्रशासनिक सेवा का जनक माना जाता है।

सर जोन सॉर (1793 ई से 1798 ई तक) –इसने तटस्थता तथा निर्हस्क्षेप की नीति का पालन किया। इसी कारण उसनक अपने 5 वर्ष के प्रशासन काल में किसी भ युद्ध में भाग नहीं लिया।

लार्ड वेलेजली (1798ई ये 1805 ई तक) –चतुर्थ मैसूर युद्ध जिसमें टीपू सुल्तान हारा तथा मारा गया, वेलेजली के नेतृत्व में अंग्रेजों ने लडा था। वेलेजली ने भारतीय राज्यों को अंग्रेजी राजनैतिक परिधि में लाने के लिए सहायक संन्धि प्रणाली का प्रयोग किया ।

जॉर्ज बोर्ला 1805 से 1807 ई तक –

लार्ड मिण्टो प्रथम – चार्ल्स मेटकॉफ को मिण्टो ने ही महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में भेजा था। जहां 1809 ई में अमृतसर की संन्धि की गयी।

लॉर्ड हैस्टिग्ज 1813 ई से 1823 तक

लॉर्ड एमहर्स्ट 1823 ई से 1828 ई तक

भारत के गवर्नर जनरल

- **लॉर्ड विलियम बैटिंग** (1828 ई–1835 ई.) – लॉर्ड विलियम बैटिग को भारत का प्रथम गवर्नर जनरल का पद सुशोभित करने का गौरव प्राप्त है। बैटिंग के सामाजिक सुधारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। 1829 ई में सती प्रथा का अन्त । बैटिंग ने कर्नल स्लीमन तथा स्थानीय रियासतों की मदद से ठगी प्रथा समाप्त की तथा बाल हत्या को प्रतिबन्धित किया। इसके समय में मैकाले की सिफारिशों के बाद अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम स्वीकार कर लिया गया।
- **लॉर्ड चार्ल्स मेटकॉफ** (1835 ई.–1836 ई) – इसने प्रेस एक्ट (1835) पारित किया, जिसके तहत भारतीय समाचारपत्रों पर आरोपित नियंत्रण को समाप्त कर दिया गया। इसे 'भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता' कहा जाता है।
- **ऑकलैण्ड प्रथम** (1836ई–1842 ई.) – इसके शासनकाल की महत्वपूर्ण घटना थी प्रथम ब्रिटिश अफगान युद्ध (1838ई–1842ई.) जिसमें अग्रेजों को पराजय का सामना करना पडा और भारी नुकसान भी हुआ ।

लॉर्ड एलिनबरो (1842–1844) –

- **लॉर्ड हार्डिग** (1844–1848) – इसके समय की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी प्रथम आंग्ल –सिक्ख युद्ध (1845–1846) जिसमें अंग्रेजी सेना ने लाहौर पर अधिकार कर लिया और सिखों पर लाहौर की संन्धि थोप दी ।
- **लॉर्ड डलहौजी** (1848ई–1856ई) – इसी के काल हुए 'हडप नीती (Doctrine of lapse) के कारण झांसी नागपुर सतारा आदि राज्य तथा भ्रष्टाचार का आरोप लगाकर अवध तथा बरार राज्य अंग्रेजी राज्य में मिला लिये गये । शिक्षा सम्बधी सुधारों में डालहौजी ने 1854 ई के 'वुड डिस्पैच' को लागू किया । प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा के लिए एक व्यापक योजना बनायी गयी। रूडकी का इन्जीनियरिंग कॉलेज इसी समय का है। डलहौजी को भारत में रेलवे का जनक माना जाता है। क्योंकि इसी के प्रयत्नों के फलस्वरूप महाराष्ट्र में बम्बई से थाणे तक प्रथम रेल 1853 ई में चलायी गयी । पहली बार डलहौजी ने भारत में डाक टिकटों का प्रचलन प्रारम्भ किया। डलहौजी ने पृथक रूप से भारत में पहली बार सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना की ।

❖ भारत में प्रथम टेलीग्राफ लाइन(कलकता से आगरा) 1853 ई. में शुरू हुई । शिमला को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया गया।

1857 की क्रान्ति

❖ **1857 ई0 के विद्रोह क प्रमुख केन्द्र व प्रमुख विद्रोही नेता**

केन्द्र	विद्रोही नेता	विद्रोह की तिथत	उन्मूलन के सैन्य अधिकारी	उन्मूलन की तिथि
दिल्ली	बहादूर शाह जफर, बख्त खाँ	11 मई 1857 ई.	निकलसन, हडसन	20 सितम्बर 1857 ई
कानपूर	नाना साहब, तात्यां टोपे	5 जून 1857 ई.	कॉलिन कैम्पबेल	दिसम्बर 1857 ई.
लखनऊ	बेगम हजरत महल, बिरजिस कादिर	4 जून 1857 ई.	कॉलिन कैम्पबेल	31 मार्च 1858 ई.
झांसी	रानी लक्ष्मीबाई	4 जून 1857 ई	जनरल ह्युरोज	17 जून 1858 ई
जगदीशपुर	कुंवरसिंह, अमरसिंह	12 जून 1858 ई	विलियम टेलर	दिसम्बर 1858 ई
फैजाबाद	मौलवी अहमदूल्ला	जून 1857 ई	जनरल रेनॉर्ड	5 जून 1858 ई
इलाहाबाद	लियाकत अली	जून 1857 ई	कर्नल नील	1858 ई
बरेली	खान बहादूर	जूप 1857 ई	विसेण्ट आयर	1858 ई

भारत में सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलन

❖ **ब्रह्म समाज**– ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राममोहन राय द्वारा 20 अगस्त, 1828 ई को कलकता में की गयी। जिसका उद्देश्य तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त बुराइयों जैसे सती प्रथा, बहु विवाह , वैश्यागमन, जातिवाद, अस्पृस्यता आदि को समाप्त करना था राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का मसीहा माना जाता है। कालान्तर में देवेन्द्रनाथ टैगोर (1818ई.–1905 ई .) ने ब्रह्म समाज को आगे बढाया । इनके द्वारा ही केशवचन्द्र सेन को ब्रह्मसमाज का आचार्य नियुक्त किया गया।

❖ **आर्य सामाज –** आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा 1875 ई में बम्बई में की गयी । इन्हौने अपने उपदेशों में मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, अवतारवाद,पशुबलि, श्राद्ध, तन्त्र, जन्त्र, झूठे कर्मकाण्ड आदि की आलोचना की तथा पून: 'वेदों की ओर चलो' का नारा दिया। इनके विचारों का संकलन इनकी कृति 'सत्यार्थ प्रकाश ' में मिलता`। सिकी रचना इन्हौनें हिन्दी में की थी।

❖ **रामकृष्ण मिशन** – सर्वप्रथम इस मिशन की स्थापना 1897 ई में स्वामी विवेकानन्द द्वारा कलकता में की गयी। रामकृष्ण आन्दोलन के कृष्ण प्रेरक स्वामी रामकृष्ण परमहंस थे । रामकृष्ण की शिक्षाओं के प्रचार–प्रसार का श्रेय उनके योग्य शिष्य स्वामी विवेकानन्द (नरेन्द्र नाथ दत्त) को जाता है। 1839 ई में स्वामी विवेकानन्द ने शिकागों में हुई धर्म संसद में भाग लेकर पाश्चात्य जगत को भारतीय संस्कृति व दर्शन में अवगत कराया था।

❖ **थियोसोफिकल सोसाइटी** –थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना 1875 ई में मैडम ब्लावात्सकी एवं कर्नल अल्काट द्वारा न्यूयॉर्क में की गयी। जनवरी 1882 ई में वे भारत आये तथा मद्रास में अडयार के निकट मुख्यालय स्थापित किया भारत में इसे व्यापक रूप से फैलाने का श्रेय श्रीमती ऐनी बिसेन्ट को दिया जाता है।

❖ **यंग बंगाल आन्दोलन** – भारत में यंग बंगाल आन्दोलन प्रारम्भ करने का श्रेय हेनरी विवियन डेरोजियो को है। एंग्लो–इण्डियन डेरोजियों कलकता में 'हिन्दू कॉलेज' के अध्यापक थे । हेनरी विवियन डेरोजियों को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना जाता है।

❖ **अलीगढ आन्दोलन** – अलीगढ आन्दोलन, सर सैय्यद अहमद खाँ द्वारा अलीगढ में चलाया गया । इन्होंने 1877 ई में अलीगढ में ' आंग्ल–मुस्लिम स्कूल' (जिसे मोहम्मदन ऐंग्लों ओरिएण्टल स्कूल भी कहा जाता है) की स्थापना की 1920 ई क यही केन्द्र अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में सामने आया।

भारत के वायसराय

❖ **लॉर्ड कैनिंग (1856 ई0–1862ई0) --** लॉर्ड कैनिंग भारत में कम्पनी द्वारा नियुक्त अन्तिम गवर्नर जनरल तथा ब्रिटिश सम्राट के अधीन नियुक्त भारत का पहला वायसराय था।
इसके समय में ही 1857 का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विद्रोह हुआ तथा 1858 का भारतीय परिषद अधिनियम भी पारित हुआ न्यायिक सूधारों के अन्तर्गत कैनिंग ने 'इण्डियन हाई कोर्ट एक्ट' '1861 ई द्वारा मम्बई, कलकाता, मद्रास में एक एक उच्च न्यायालय की स्थापना की । कलकता, बम्बई और मद्रास विश्वविद्यालय की स्थापना (1857ई0)1861 का भारतीय परिषद् अधिनियम कैनिग के समय ही पास हुआ।

❖ **लॉर्ड एल्गिन (1862ई–1863ई.)** --

सर जॉन लारेन्स (1863ई –1869ई) -- अफगानिस्तान के सन्दभ्र में लारेन्स ने अहस्तक्षेप की निति का पालन किया और तत्कालीन शासक शेर अली से दोस्ती की । 1865 ई में उसके द्वारा भारत व यूरोम के बीच प्रथम समूद्री टेलीग्राफ सेवा शुरू की गयी।

❖ **लॉर्ड मेयो (1869ई–1872ई)** – मेयों ने भारत में वितीय विकेन्द्रकरण की नीति की शुरूआत की । उसने पृथक 'कृषि विभाग ' की तथा 'भारतीय सांख्यिकी सर्वेक्षण विभाग' की स्थापना की। पहली बार भारत में जनगणना (1872) इसी के काल में हुई । मेयो ने भारतीय राजाओं के पुत्रों की उचित शिक्षा के लिये अजमेर में मेयों कॉलेज की स्थापना की और 1872 ई में ही कृषि विभाग की स्थापना की । वह भारत का एकमात्र वायसराय था। जिसकी उसके कार्यकाल में हत्या कर दी गई । 1872 ई में एक अफगान कैदी शेर खान ने उसकी चाकु मारकर अण्डमान में हत्या कर दी ।

❖ **लॉर्ड नार्थ बुक(1872–1876ई)** – पंजाब का प्रसिद्व कुका आन्दोलन इसी के समय में हुआ । इसी के समय स्वेज नहर खुल जाने के कारण ब्रिटेन और भारत के मध्य व्यापार में वृद्धि हुई

❖ **लॉर्ड लिटन(1876–1880ई)** – 1 जनवरी 1877 ई. को ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को 'केसर –ए –हिन्द' की उपाधि से सम्मानित करने के लिए दिल्ली में भव्य दिल्ली दरबार का आयोजन किया। मार्च 1878 ई में लिटन ने वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम पारित कर भारतीय समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया। लिटन के समय में ही 1878 ई का भारतीय शस्त्र अधिनियम पारित हुआ।

❖ **लॉर्ड रिपन (1880–1884ई0)** – अपने सुधार कार्यों के अन्तर्गत रिपन ने सर्वप्रथम 1882 ई में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट समाप्त कर दिया । इसके सुधार कार्यो मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य था–'स्थानीय स्वशासन की शुरूआत '। रिपन के समय में ही 1881 ई में ही भारत में नियमित जनगणाना की शुरूआत हुई जो तब से लेकर अब तक प्रत्येक दस वर्ष के अन्तराल पर की जाती है। प्रथम फैक्ट्री अधिनियम, 1881 ई रिपन द्वारा ही लाया गया । इसमें बाल श्रम पर रोक लगायी गई । रिपन ने शैक्षिक सुधारों के अन्तर्गत विलियम हन्टर के नेतृत्व में एक आयोग का गठन किया । आयोग ने 1882 ई में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की । रिपन के समय में ही चर्चित इल्र्बट विधेयक' प्रस्तुत किया गया। (1883ई.)विधेयक मे फौजदारी दण्ड व्यवस्था में प्रचलित भेदभाव को समाप्त करने का प्रयतन किया गया था। विधेयक में भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीयनों के मुकदमों को सूनने का अधिकार दिया गया। इस बिल की अंग्रेजों द्वारा कटू आलोचना की गई और रिपन को वापस बुला लिया गया।

❖ **लॉर्ड डफरिन(1884–1888 ई.)** – डफरिन के समय में ही 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना की गई ।

❖ **लॉड लैंसडाउन(1888–1894 ई.)** – लॉर्ड लैंसडाउन के समय भारत और अफगानिस्तान के मध्य सीमा(वर्तमान में पाकिस्तान व अफगानिस्तान) का निर्धारण हुआ, जिसे 'डुरण्ड लाइन' के नाम से जाना जाता है। लैंसडाउन के समय 1891 ई में दूसरास फैक्ट्री एक्ट लाया गया जिसमें एक साप्ताहिक छूट्टी तथा स्त्रियों द्वारा 11 घण्टे प्रतिदिन से अधिक काम करने पर प्रतिबन्ध लगाया गया।

❖ **लॉड एल्गिन द्वितीय (1894–1899ई.)** –

❖ **लॉड कर्जन (1899–1905ई.)** –शैक्षिक सुधारों के अन्तर्गत कर्जन ने 1902 ई में विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया तथा 'भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम(1904) पास किया । भारतीय रेलवे के विकास क्षेत्र में सर्वाधिक रेलवे का निर्माण कर्जन के समय में ही हुआ ।कर्जन ने भारत में पहली बार ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा व मरम्मत हेतू 'भारतीय पुरातत्व विभाग, (1904ई) की स्थापना की । कर्जन के समय में ही 1905 ई में बंगाल का विभाजन हुआ । यह उसकी भारी राजनीतिक भूल साबित हुई बंगाल विभाजन के विरूद्ध एक अभूतपूर्व देशव्यापी आन्दोलन उत्पन्न हो गया।

❖ **लॉर्ड मिण्टो द्वितीय** – 1905 ई में भारत के वायसरय बने लॉर्ड मिण्टों का सर्वाधिक महत्पवुर्ण कार्य भारत सचिव मार्ले के सहयोग से लाया गया भारतीय परिषद एक्ट1909 ई अथवा मिण्टो–मार्ले सुधार था। मिण्टों के समय में ही आगा खॉं द्वारा 1906 ई में 'मुस्लिम लीग' की स्थापना की गयी। ।इसके समय में ही 1907 ई में कांग्रेस का सूरत अधिवेशन हुआ जिससे कांग्रेस दो घडों में विभाजित हो गई ।

❖ **लॉर्ड हार्डिग द्वितीय** – इसके समय के महत्वपुर्ण कार्य ब्रिटेन के राजा जार्ज पंचम का भारत आगमन (12 दिसम्बर 1911 ई)दिल्ली में एक भव्य दरबार का आयोजन, बंगाल विभाजन रद्द करने की घोषणा (1911ई) एवं भारत की राजधानी कलकता में दिल्ली स्थानान्तरित करने की घोषणा (1911ई) थे।इसकी बग्घी पर 1912 ई में क्रान्तिकारी रास बिहारी बोस द्वारा बम फेंका गया था पर यह बच गए थे। महात्मा गांधी की दक्षिण अफ्रीका से भारत वापसी (1915ई)

❖ **लॉर्ड चेम्सफोर्ड(1916–1921ई)** – इसके समय में 1919 ई का रौलेट एक्ट पास हुआ प्रसिद्व जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड चेम्सफौर्ड के समय मे ही 13 अप्रेल 1919 ई में हुआ। इसके समय में ही भारत सरकार अधिनियम 1919ई या मांटेग्यू–चैम्सफोर्ड

सुधार लाया गया। खिलाफत आन्दोलन(1920–21ई) – एवं गांधीजी के सत्याग्रह असहयोग आन्दोलन (1920) की शुरूआत तृतीय अफगान युद्ध आदि महत्वपुर्ण घटनाएं चैमसफोर्ड के समय में हुई

- **लॉर्ड रीडिंग(1921–1926ई)**– इसके समय समय में 1928 ई में साइमन कमीशन' भारत आया तथा 6 अप्रैल 1930 मे सविनय अवज्ञा आन्दोलन गांधीजी द्वारा प्रारम्भ किया गया। इसके समय में ही 1930 ई में लन्दन में पथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया। 5 मार्च 1930 को गांधी–इरविन समझोते पर हस्ताक्षर किये गये और साथ ही सविनय अवज्ञा आन्दोलन को वापस लिया गया।
- **लॉर्ड विलिंगटन(1936–1944ई)** – इसके समय में 1 सितम्बर से 1931 तक द्वितीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन लन्दन में हुआ ।इस सम्मेलन में गांधी जी ने कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया। महात्मा गांधी एवं अम्बेडकर के बीच 25 सितम्बर 1932 को पूरा समझौता हुआ । अगस्त 1932 मे रैम्जे मैकडोनाल्ड ने प्रसिद्व 'साम्प्रदायिक अधिनिर्णय' की घोषाणा की तथा दिसम्बर 1932 में विलिगंटन के समय में ही तृतीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन लन्दन में हुआ।
- **लॉर्ड लिनलिथगो (1936–1944ई)** – इसके समय में पहले चुनाव कराये गये चुनाव के परिणाम राष्ट्रीय कांग्रेस के पक्ष में रहे । 1 सितम्बर 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारम्भ इन्हीं के समय में हुआ । अप्रैल 1939 में सुभाष चन्द्र बोस ने फॉरवर्ड ब्लॉक नामक एक नई पार्टी का गठन किया ।तथा लिनलिथगो के समय मे ही पहली बार 1940 ई में पाकिस्तान की मांग की गयी। 8 अगस्त 1940 को प्रसिद्ध 'अगस्त प्रस्ताव ' अंग्रेजों द्वारा लाया गया। 1942 ई में 'क्रिप्स मिशन' भारत आया तथा 1942 मे ही कांग्रेस ने भारत छोडो आदोलन प्रारम्भ किया।
- **लॉर्ड वेवेल** (1944–1947ई) – वेवेल के समय में 1945 ई में शिमला समझौता हुआ, कैबिनेट मिशन1946 ई में भारत आया। तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमत्री क्लीमेण्ट एटली ने भारत को जून1948 के पहले स्वतन्त्र करने की घोषणा की ।
- **लॉर्ड माउण्टबेटन (मार्च 1947 से जून1948)** – भारत का अन्तिम वायसराय तथा स्वतंन्त्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल जिसने 3 जून 1947 को यह घोषणा की कि भारत और पाकिस्तान के रूप में भारत का विभाजन ही समस्या का हल है। भारतीय स्वतन्त्रता विधेयक ब्रिटिश संसद मे जुलाई 1947 में प्रधानमंत्री एटली द्वारा प्रस्तुत किया गया। विधेयक के अनुसार भारत और पाकिस्तान दो स्वतन्त्र राष्ट्रों के निर्माण की बात कही गयी।
- **चक्रवर्ती राजगोपालचारी (1948–1950)** – लॉर्ड माउण्टबेटन की वापसी के बाद 21 जून 1948 को चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भारत के गवर्नर जनरल बनाये गये । वे स्वतंन्त्र भारत के प्रथम भारतीय व अन्तिम गवर्नर जनरल थे। इनके बाद भारत के संविधान के अनुसार शासन प्रमुख राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री बनने लगे ।

भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन

- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885 ई0)** – कांग्रेस की स्थापना 1885 ई. मे ए0 आ0 ह्यूम द्वारा की गयी थी जो कि एक सेवानिवृत अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारी था। इसका प्रथम अधिवेशन दिसम्बर 1885 ई में बम्बई में हुआ। जिसकी अध्यक्षता व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने की। 1885 ई में कांग्रेस की स्थापना के बाद अगले बीस वर्षो तक इस पर ऐसे गुट का प्रभाव था जिसे 'उतरदायी गुट' कहा जाता था। उदारवादियों के प्रमख नेता थे दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी फिरोजशाह मेहता ,गोविन्द रानाडे ,गोपालकृष्ण गोखले ,मदन मोहन मालवीय आदि 1905 ई से 1919 ई तक के चरण को नव राष्ट्रवाद अथवा गरमपंथियों के उदय का काल माना जाता है। कांग्रेस के गरमपंथी नेताओं में प्रमुख थे – बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपतराय (लाल,बाल,पाल) अरविन्द घोष आदि ।
- **बंगाल का विभाजन** (1905)-- बंगाल में राष्ट्रीय चेतना को नष्ट करने के उद्देश्य से लॉर्ड कर्जन द्वारा 16 अगस्त 1905 ई को बंगाल का विभाजन कर दिया गया।
- **स्वदेशी व स्वराज(1905 ई तथा 1906 ई)--** लाल, बाल, पाल और अरविन्द घोष के प्रयासों के कारण कांग्रेस ने स्वदेशी व स्वराज की मांग की । 1905 ई के बनारस अधिवेशन में गोपाल कृष्ण गोखले की अध्यक्षता में कांग्रेस ने स्वदेशी की मांग रखी। 1906 ई.में कलकता अधिवेशन में दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में कांग्रेस ने स्वराज की मांग रखी।
- **मुस्लिम लीग की स्थापना** (1906ई) –इसके संस्थापकों में आगा खाँ, नवाब सलीमुल्ला और नवाब मोहसिन–उल–मूल्क प्रमुख थे जिन्होंने 1906 ई. में इसकी स्थापना की । मुस्लिम लीग की स्थापना प्रमुख उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के प्रति मुसलमानों की निष्ठा बढाना, मुसलमानों के राजनैतिक अधिकारों की रक्षा करना तथा कांग्रेस के प्रति मुसलमानों में घृणा उत्पन्न करना था।
- **कांग्रेस का सूरत अधिवेशन (1907ई.)--** इस अधिवेशन में कांग्रेस स्पष्ट रूप से नमपंथियों व गरमपंथियों में विभाजित हो गयी थी। विवाद का केन्द्र रासबिहारी घोस थे जिन्हें इस अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया था।
- **दिल्ली दरबार (1911ई) --** इंग्लैण्ड के सम्राट जॉर्ज पंचम एवं महारानी मेरी के स्वागत में 1911 ई में दिल्ली मे एक भव्य दरबार का आयोजन किया गया। इस दरबार मे बंगाल विभाजन को रद्द करने तथा भारत की राजधानी को कलकता से दिल्ली स्थानान्तरित करने की घोषणा हुई ।

- **लखनऊ समझोता।(1916 ई.)** –ब्रिटेन और तुर्की के बीच युद्ध के कारण मुसलमानों में अंग्रेजों के प्रति विद्वेष की भावन उत्पन्न हो गयी थी। 1916 ई मे लखनऊ में मुस्लिम लीग के नेता मोहम्मद अली जिन्ना तथा कांग्रेस के मध्य एक समझौता हुआ जिसके अन्तर्गत कांग्रेस व लीग ने मिलकर एक ' संयुक्त समिति की स्थापना की । समझोते के तहत कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की मांग स्वीकार कर ली।
- **होमरूल लीग आन्दोलन (1916ई)–** श्रीमती ऐनी बिसेन्ट के प्रयासों से संवैधानिक उपायों द्वारा स्वाशासन प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत में होमरूल लीग की स्थापना की गयी । बाल गंगाधन तिलक ने 28 अप्रैल, 1916 ई. को महाराष्ट्र मे होमरूल लीग की स्थापना की, जिसका केन्द्र पूना था। सितम्बर 1916 ई में ऐनी बेसेन्ट द्वारा मद्रास मे अखिल भारतीय होमरूल लीग की स्थापना की गयी। तथ जॉर्ज अरूडेल को लीग का सचिव बनाया।
- **अगस्त घोषणा (1917 ई.)** – भारत सचिव मांटेग्यू द्वारा 20 अगस्त 1917 को ब्रिटन की कॉन सभा में एक प्रस्ताव पढा जिसमें भारत में प्रशासन की हर शाखा में भारतीयों को अधिक प्रतिनिधित्व दिये जाने की बात कही गयी थी। इसे माटेग्यू घोषणा कहा गया ।
- **रौलेट एक्ट(1919ई)** – इस एक्ट के द्वारा अंग्रेज सरकार जिसको चाहे जब तब बिना मुकदमा चलाये जेल में बंद रख सकती थी। यह जनता की सामान्य स्वतंत्रता पर प्रत्यक्ष कुठाराघात था। इस एक्ट को बिना अपील 'बिना वकील तथा बिना दलील का कानून भी कहा गया। इसे काला अधिनियम एवं आंतंकवादी अपराध अधिनियम के नाम से भी जाना जाता है।
- **जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड(13 अप्रैल 1919 ई)** – रौलेट एक्ट के विरोध मे जगह–जगह जन सभाए आयोजित की जा रही थी । इसी दौरान सरकार ने पंजाब के लोकप्रिय नेता डॉ सैफूद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल को गिरफ्तार कर लिया । इसी गिरफतारी का विरोध करने के लिये 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जजियांवाला बाग में एक जनसभा आयोजित की गयी, जिस पर जनरल डायर ने गोली चलवा दी । जिससे सैकडों लोग मारे गए। 13 मार्च 1940 को सरदार उधमसिंह ने कैक्सटन हॉल (लन्दन) में एक मिटिंग को सम्बोधित कर रहे जनरल डायर की गोली मारकर हत्या कर दी।
- **खिलाफत आन्दोलन (1920ई)** – प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन और उसके सहयोगियों द्वारा तुर्की पर किये गये अत्याचारों ने मुसलमानों को गहरा आघात पहुंचाया । इसके परिणामस्वरूप 1919 ई. मे अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी का गठन किया गया । इस आन्दोलन और शौकत अली ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।
- **असहयोग आन्दोलन (1920ई.)** –लाला लाजपतराय राय की अध्यक्षता में हुए कलकता अधिवेशन में गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दालन का प्रस्ताव पारित हुआ।
  इस आन्दोलन के दौरान विद्यार्थियों द्वारा शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार, वकीलों द्वारा न्यायालयों का बहिष्कार और गांधी जी द्वारा अपनी ' केसर–ए–हिन्द ' की उपाधि वापस की गयी। फरवरी 1922 ई. मे गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने की योजना बनायी।
  परन्तु उसके पूर्व ही उतर प्रदेश के गोरखपुर जिले में स्थित चौरी–चौरी नामक स्थान पर 5 फरवरी 1922 ई को आन्दोलकारी भीड ने पुलिस के 22 जवानों को थाने के अन्दर जिन्दा जला दिया । इस घटना से गांधी जी अत्यन्त आहत हो गये और उन्होंने 12 फरवरी 1922 ई को असयोग आन्दोलन वापस ले लिया ।
- **साइमन कमीशन (1927 ई .)** – ब्रिटिश सरकार ने सर जान साइमन के नेतृत्व में 7 सदस्यों वाले आयोग की स्थापना की, जिसमें सभी सदस्य ब्रिटेन के थे । इस आयो का कार्य इस बात की सिफारिश करना था कि क्या यहां के लोगों को अधिक संवैधानिक अधिकार दिये जाये और यदि दिये जाये तो उनका स्वरूप क्या हो? इस आयोग में किसी भी भारतीय को शामिल नही किया गया जिसके कारण भारत में इस कमीशन का तीव्र विरोध हुआ। आयोग के विरोध के कारण लखनऊ मे जवाहरलाल नेहरू, गोविन्द बल्लभ पन्त आदि ने लाठियां खायीं । लाहौर मे लाठी की गहरी चोट के कारण लाला लाजपतराय की अक्टूबर 1928 मे मृत्यू हो गयी।
- **कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929ई.)** – 1929 ई के लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता पं. जवाहरलाल नेहरू ने की जिसमें पूर्ण स्वराज को अन्तिम लक्ष्य माना गया। यह भी निश्चित किया गया कि हर साल 26 जनवरी को सांकेतिक स्वाधीनता दिवस मनाया जायेगा ।
- **दाण्डी यात्रा (1930ई)** – इसे नमक सत्याग्रह के रूप में भी जाना जाता है। अपने 78 अनुयायियों के साथ गांधी जी ने साबरमती आश्रम से 12 मार्च, 1930 ई को दाण्डी के लिए यात्रा आरम्भ की। 24 दिन की लम्बी यात्रा के पश्चात 5 अप्रैल, 1930 को दाण्डी में पहुचकर गांधी जी ने सांकेतिक रूप से नमक कानून तोडा और सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया ।
- **प्रथम गोलमेज सम्मेलन** –यह सम्मेलन 12 नवम्बर 1930 ई. से 13 जनवरी 1931 ई तक लंदन मे आयोजित किया गया। इसमें पहली बार भारतीयों को अंग्रेजो ने बराबरी का दर्जा प्रदान किया। यह सम्मेलन कांग्रेस के बहिष्कार के फलस्वरूप फीका साबित हुआ ।

❖ **गांधी–इरविन समझौता (1931 ई.)** – महात्मा गांधी और वायसराय इरविन के मध्य 5 मार्च 1931 ई को एक समझौता हुआ जिसे गांधी –इरविन समझौते के नाम से जाना जाता है। इस समझौते के फलस्वरूप कांग्रेस ने अपनी तरफ से सविनय अवज्ञा आन्दोलन समाप्त करने की घोषणा की । तथा गांधी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने को तैयार हुए । इसे ' दिल्ली समझौता ' भी कहा जाता है।

❖ **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन(1931 ई.)**– यह सम्मेलन 7 सितम्बर 1931 ई से 1 दिसम्बर 1931 ई.तक लंदन में हुआ । यह सम्मेलन साम्प्रदायिक समस्या पर विवाद के कारण पूर्णतः असफल हो गया। लन्दन से वापस आकर गांधी जी ने पुनः सविनय अवज्ञा अन्दोलन प्रारम्भ किया।

❖ **साम्प्रदायिक पंचाट**(1932ई) – 16 अगस्त 1932 ई. को विभिन्न सम्प्रदायों के प्रतिनिधित्व के विषय पर ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैक्डोनाल्ड ने 'कम्यूनल अवार्ड' जारी किया। इस पंचाट में पृथक निर्वाचक पद्धति को न केवल मुसलमानों के लिए जारी रखा गया। अपितु इसे दलित वर्गों पर भी लागु किया गया । इसके विरोध में गांधी जी ने जेल में ही 20 सितम्बर 1932 ई को आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया।
मदन माहन मालवीय डॉ राजेन्द्र प्रसाद और राजगौपालचारी के प्रयत्नों से पांच दिन पश्चात 25 सितम्बर 1932 को गांधी जी और दलित नेता अम्बेडकार में पूना समझोता सम्पन्न हुआ।

❖ **पुना समझौता(25 सितम्बर 1932 ई)** – गांधी जी और अम्बेडकर के मध्य 25 सितम्बर 1932 को एक समझौता हुआ जिसे 'पूना समझौता ' के नाम से जाना जाता है। समझौते के अन्तर्गत अम्बेडकर ने हरिजनों के पृथक प्रतिनिधित्व की मांग को वापस ले लिया संयुक्त निर्वाचन के सिद्धांन्त को स्वीकारा गया। साथ ही हरिजनों के लिए सुरक्षित 75 स्थानों को बढाकर 148 कर दिया।

❖ **तृतीय गोलमेज सम्मेलन (1932 ई)** –क्रांन्तिकारी गतिविधियाँ – 17 नवम्बर 1932 ई से 24 दिसम्बर 1932 ई तक आयोजित यह सम्मेलन लंदन में कांग्रेस के बहिष्कार के फलस्वरूप फीका साबित हुआ।
अक्टूबर 1924 ई. में शाचिन्द्र सान्याल, जोगेशचन्द्र चटर्जी, रामप्रसाद बिस्मिल और चन्द्रशेखर आजाद ने कानपूर में एक क्रान्तिकारी संस्था 'हिन्दूस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन ' की स्थापना
इस संस्था द्वारा 9 अगस्त 1925 ई को उतर रेलवे के लखनऊ –सहारनपूर सम्भाग के काकोरी नामक स्थान प ट्रेन पर डकैती कर सरकारी खजाना लूटा गया था। यह घटना 'काकोरी काण्ड' के नाम से चर्चित है। सरकार ने काकोरी काण्ड के षड्यन्त्र में रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला, रोशन रोशनलाल और राजेन्द्र लाहिडी को फाँसी दी । चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में सितम्बर 1928 ई को दिल्ली में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की गई थी । साइमन कमीशन के विरोध के समय लाला लाजपतराय पर लाठियों से प्रहार करवाने वाले सहायक पुलिस अधीक्षक साण्डर्स की 30 अक्टूबर 1928 ई. को भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद और राजगुरू द्वारा की गई हत्या हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशिएशन की क्रान्तिकारी गतिविधि थीं। हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के दो सदस्यों (भगतसिंह और बटूकेश्वर दत) ने 8 अप्रेल 1829 ई को केन्द्रीय विधानमण्डल में कहस के दौरान बम फेंका , जिसका उद्देश्य सरकार को अपनी आवाज सुनने पर विवश करना था। 23 मार्च 1931 ई को भगतसिंह, सुखदेव, और राजगुरू को ब्रिटिश सरकार द्वारा फाँसी दी गई तत्पश्चात हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के एकमात्र बचे सदस्य चन्द्रशेखर आजाद 27 फरवरी 1931 ई को पुलिस के साथ मुठभेड मे शहीद हुए

❖ **पाकिस्तान की मांग (1940)** –मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में अध्यक्षता करते हुए मोहम्मद अली जिन्ना ने 23 मार्च 1940 को भारत से अलग मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान की मांग की । मुसलमानों के पृथक राज्य का नाम पाकिस्तान हो यह विचार कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के एक अनुस्नातक विद्यार्थी चौधरी रहमत अली के मस्तिष्क में आया था। सबसे पहले इकबाल ने 1930 ई में मुसलमानों के लिए पृथक राज्य का सुझाव दिया था।

❖ **क्रिप्स प्रस्ताव(1942)** – 1942 ई में जापानी फौजों के रंगून पर कब्जा कर लेने से भारत की सीमाओं पर सीधा खतरा पैदा हो गया । अब ब्रिटेन ने भारत का युद्ध में सक्रिय सहयोग पाने के लिए युद्धकालीन मन्त्रिमण्डल के एक सदस्य स्टैफोर्ड क्रिप्स को घोषणा के मसविदे के साथ भारत भेजा ।
क्रिप्स प्रस्ताव की प्रमुख सिफारिशें इस प्रकार थी।
युद्ध के बाद एक ऐसे भारतीय संघ के निर्माण का प्रयत्न किया जाये जिसे पूर्ण उपनिवेश का दर्जा प्राप्त हो। युद्ध के पश्चात प्रान्तीय व्यवस्थापिकाओं के निचले सदनों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर एक संविधान निर्मात्री परिषद् का गठन किया जायेगा । जो देश के लिए सविधान का निर्माण करेगी । गांधी जी ने क्रिप्स योजना के बारे में कहा की ' यह एक आगे की तारीख का चेक था। ' जिसमें जवाहरलाल नेहरू ने 'जिसका बैंक नष्ट होने वाला था' वाक्य जोड दिया।

❖ **भारत छोडो आन्दोलन (1942ई0)** – अगस्त प्रस्ताव तथा क्रिप्स मिशन की असफलता तथा कांग्रेस द्वारा शुरू किये गये आन्दोलन के दौरान राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की मांग को अस्वीकार किये जाने पर कांग्रेस ने बम्बई अधिवेशन में 8 अगस्त को 1942 को ' भारत छोडो प्रस्ताव' पारित किया। गांधी जी ने लोगों को 'करो या मरो का नारा दिया।

❖ **कैबिनेट मिशन (1946)** – ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने 15 फरवरी 196 को भारतीय संविधान सभा की स्थापना एवं तत्कालीन ज्वलन्त समस्याओं पर भारतीयों से विचार विमर्श के लिए 'कैबिनेट मिशन' को भारत भेजने की घोषणा की ।
24 मार्च, 1946 को दिल्ली पहुंचे कैबिनेट मिशन के सदस्य थे–
स्टैफोर्ड क्रिप्स, पैथिक लारेंस ए. वी. एलेक्जेण्डर 16 मई 1946 को इस मिशन ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की–
एक भारतीय संघ स्थापित होगा जिसमें देशी राज्य व ब्रिटिश भारत के प्रान्त सम्मिलित होंगें। यह संघ वैदेशिक , रक्षा तथा यातायात विभागों की व्यवस्था करेगा। संविधान निर्माण के लिए 'सविधान सभा' के गठन की बात कही गयी ।
जुलाई, 1946 मे कैबिनेट मिशन योजना के अन्तर्गत संविधान सभा के लिए चुनाव हुआ , मुस्लिम लीग को 389 सदस्यीय संविधान सभा के केवल कुछ सीटें ही मिली । मुस्लिम लीग ने कैबिनेट मिशन योजना को अस्वीकार रि दिया तथा पाकिस्तान को प्राप्त करने के लिए 16 अगस्त 1946 को ' प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' के रूप में मनाया।

❖ **माउन्टबेटन योजना और स्वतंन्त्रता प्राप्ति (1947ई.)** –
22 मार्च 1947 ई. को भारत के अंतिम ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड माउण्टबेटन भारत आये । 3 जून 1947 ई को लॉर्ड माउण्टबेटन द्वारा एक योजना की घोषणा की गयी । जिसे माउण्टबेटन योजना के नाम से जाना जाता है।
माउण्टबेटन योजना के आाधार पर ही 'भारतीय स्वतंन्त्रता विधेयक 'ब्रिटिश संसद में 4 जुलाई 1947 को प्रस्तुत किया गया जिसे 18 जुलाई को स्वीकृति मिली ।
प्रमुख प्रावधान –
भारत और पाकिस्तान नाम के दो अधिराज्यों को स्वतन्त्र कर दिया जायेगा और दोनो अधिराज्य अपनी–अपनी संविधान सभा का गठन करेंगें । माउण्टबेटन योजना को स्वीकार कर दशि विभाजन की तैयारी आरम्भ हो गयी । इस प्रकार 15 अगस्त 1947 को भारत तथा पाकिस्तान नामक दो नये राष्ट्र अस्तित्व में आये ।
मोहम्मद अली जिन्ना पाकिस्तान के प्रथम गवर्नर जनरल बने। लॉर्ड माउन्टबेटन को स्वतंन्त्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल बनाया गया तथा पं. जवाहर लाल नेहरू को स्वतंत्र भारत का प्रधानमंत्री बनाया गया।

भारतीय इतिहास के प्रमुख युद्ध

सन (ई0 पू0)	युद्ध	किन–किन के मध्य
326	हाइडेस्पीज का युद्ध	सिकन्दर और पंजाब के राजा पोरस के बीच जिसमें सिकन्दर विजयी हुआ ।
261	कलिंग की लडाई	सम्राट अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया था और युद्ध के रक्तपात से विचलित होकर उन्होंने युद्ध न करने की कसम खाई ।
इस्वी सन		
712	सिन्ध की लडाई	मोहम्मद कासिम ने अरबों की सता स्थापित की ।
1191	तराईन का प्रथम युद्ध	मोहम्मद गौरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच हुआ चौहान विजयी हुआ था।
1192	तराईन का द्वितीय युद्ध	मोहम्द गौरी और पृथ्वीराज चौहान के मध्य इसमें मौ. गौरी की जीत हुई ।
1194	चंदावर का युद्ध	इसमें मोहम्मद गौरी ने कन्नौज के राजा जयचंद को हराया ।
1526	पानीपत का प्रथम युद्ध	मुगल शासक बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच
1527	खानवा का युद्ध	इसमें बाबर ने राणा सांगाा को पराजित किया।
1529	घाघरा का युद्ध	इसमें बाबर ने महमूद लोदी के नेतृत्व में अफगानों को हराया।
1539	चौसा का युद्ध	इसमें शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को हराया।
1540	कन्नौज का युद्ध	इसमें फिर शेरशाह सूरी ने हुमायू को हराया तथा भारत छोडने पर मजबूर किया।
1556	पानीपत का द्वितीय युद्ध	अकबर और हेमू के बीच
1565	तालीकोटा का युद्ध	इस युद्ध से विजयनगर साम्राज्य का अंत हो गया क्योंकि बीजापुर , बीदड अहमदनगर व गोलकुण्डा की संगठित सेना लडी थी ।
1576	हल्दीघाटी का युद्ध	अकबर और राणा प्रताप के बीच राणा सांगा की हार हुई
1757	प्लासी का युद्ध	अंग्रेजों और सिराजद्दौला क बीच, जिसमें अंग्रेजो की विजय हुई और भारत में अग्रेजी शासन की नींव पडी।
1760	वांडीवाश का युद्ध	अंग्रेजों और फ्रांसीसीयों के बीच, जिसमें फासीसियों की हार हुई ।
1761	पानीपत का तृतय युद्ध	अहमदशाह अब्दाली और मराठों के बीच इसमें मराठों की हार हुई ।
1764	बक्सर का युद्ध	अंग्रेजों और शुजाउद्दौला , मीर कासिम एवं शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना के बीच , अग्रेजों की विजय हुई। अग्रेजों को भारतवर्ष में सर्वोच्च शक्ति माने जाने लगा।
1767–69	प्रथम मैसूर यूद्ध	हैदर अली और अंग्रेजों के बीच, जिसमें अंग्रेजों की हार हुई

1780–84	द्वितीय मैसूर युद्ध	हैदर अली और अंग्रेजों के बीच, जो अनिर्णित रहा।
1790	तृतीय आंग्ल मैसूर यूद्ध	टीपू सूल्तान और अंग्रेजों के बीच लडाई संन्धि के द्वारा समाप्त हुई ।
1799	चतुर्थ आंग्ल–मैसूर युद्ध	टीपू सूल्तान और अंग्रेजों के बीच टीपू की हार हुई और मैसूर शक्ति का पतन हुआ।
1849	चिलियान वाला युद्ध	ईस्ट इण्डिया कम्पनी और सिक्खों के बीच हुआ था जिसमें सिक्खों की हार हुई
1962	भारत चीन सीमा युद्ध	चीनी सेना द्वारा भारत की सीमा क्षेत्रों पर आक्रमण कुछ दिन तक युद्ध होने के बाद एक –पक्षीय युद्ध विराम की घोषणा । भारत का अपनी सीमा के कुछ हिस्सों को छोडना पडा।
1965	भारत –पाक युद्ध	भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध अनिर्णित हुआ। जिसमें पाकिस्तान की हार हुई फलस्वरूप बांग्लादेश एक स्वतंत्र देश बना।
1999	कारगिल युद्ध	जम्मू एवं कश्मीर के द्रास और कारगील क्षेत्रों में पाकिस्तानी घुसपैठियों को लेकर हुए युद्ध में पुनः पाकिस्तान को हार का सामना करना पडा और भारतीयों को जीत मिली ।

❖